जुलाई 2020

दादावाणी

Retail Price ₹ 15

ज्ञानी पुरुष तो पारदर्शक कहे जाते हैं। वे तो आईना हैं। ज्ञानी पुरुष में सभी प्रकट हो चुके होते हैं। यदि वे आईने में नानक साहब को देखें तो नानक दिखाई देंगे, कृष्ण को देखें तो कृष्ण दिखाई देंगे। जिन्हें जो भगवान देखने हों, वे ज्ञानी पुरुष में दिखाई देंगे।

उनमें खुदा भी दिखाई देंगे, महावीर भी दिखाई देंगे। जिसे जिस दृष्टि से देखना हो वैसा दिखाई देगा।

अडालज : ऑनलाइन हिन्दी शिविर : 28 से 30 मई

अडालज : ऑनलाइन युथ शिविर : 6-7 जून

अडालज : ऑनलाइन UK शिविर : 12 से 14 जून

वर्ष : 15 अंक : 9
अखंड क्रमांक : 177
जुलाई 2020
पृष्ठ - 28

Editor : Dimple Mehta
© 2020
Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved.
Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

Printed at
Amba Offset
B-99, GIDC, Sector-25,
Gandhinagar – 382025.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

संपर्क सूत्र :
त्रिमंदिर, सीमंधर सिटी,
अहमदावाद-कलोल हाइ-वे,
पो.ओ.: **अडालज**,
जि.: गांधीनगर-382421.
फोन: (079) 39830100
email: dadavani@dadabhagwan.org
www.dadabhagwan.org
दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए:
+91 8155007500

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)
15 साल
भारत : 1500 रुपये
यू.एस.ए. : 150 डॉलर
यू.के. : 120 पाउन्ड
वार्षिक
भारत : 150 रुपये
यू.एस.ए. : 15 डॉलर
यू.के. : 12 पाउन्ड
भारत में D.D./M.O. 'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम से संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

दादावाणी

ज्ञानी की दशा, प्योरिटी से आगे ट्रान्सपेरेन्सी

संपादकीय

मोक्ष अति-अति सुलभ है लेकिन 'ज्ञानी पुरुष' का मिलना अति-अति दुर्लभ है! उनकी सही पहचान होना वह अति-अति दुर्लभ, दुर्लभ, दुर्लभ है! ऐसे मोक्ष दाता ज्ञानी पुरुष की यदि पहचान हो जाए और उनसे मिलना हो जाए तो मोक्ष नकद हाथ में मिल जाता है! वर्तमान काल में ऐसे तरण तारणहार प्रत्यक्ष ज्ञानी पुरुष परम पूज्यश्री दादा भगवान(दादाश्री) हुए, इसलिए हमें अक्रम ज्ञान द्वारा नकद मोक्ष प्राप्त हो गया हैं।

ऐसे ज्ञानी पुरुष के प्योर चारित्र की, आंतरिक दशा कैसी होगी? दादाश्री कहते थे कि हमें इस जगत् की कोई चीज़ नहीं चाहिए। हम में क्रोध-मान-माया-लोभ नहीं है, हमारी स्थिति संपूर्ण राग-द्वेष रहित है। करने या न करने से परे होते हैं। हम निरंतर वर्तमान में ही रहते हैं, संपूर्ण अप्रयत्न दशा, हम में मेरापन नहीं है, इसलिए कुदरत जैसा रखती है हम वैसे ही रहते हैं, किसी भी तरह की दखलंदाज़ी नहीं। हम बालक जैसे निर्दोष हैं। बुद्धि-अहंकार रहित दशा यहाँ पर देखने को मिलती है। हमें कोई भी संयोग बाधक नहीं होता या हम किसी भी संयोग से बंधते नहीं। जहाँ किसी भी प्रकार की मान-लक्ष्मी-कीर्ति-विषय की भीख नहीं होती वहाँ संपूर्ण प्योरिटी होती है। और इसीलिए हम में निरंतर स्वतंत्र की खुमारी रहती है।

प्रस्तुत अंक में *पुद्गल* (जो पूरण और गलण होता है) की प्योरिटी का स्पष्टीकरण करते हुए दादाश्री बताते हैं कि प्योरिटी का अर्थ क्या है? जब किसी भी परमाणु में राग-द्वेष नहीं रहता है, क्रोध-मान-माया-लोभ खत्म हो जाते हैं तब प्योरिटी आती है। पूरा जगत् विषय-कषाय पर टिका हुआ है, जब विषय-कषाय रहित स्थिति होगी तब प्योरिटी आएगी।

अब ऐसी प्योरिटी कब आएगी? जैसे-जैसे हम ज्ञानी के आशय को समझेंगे, उनके परिचय में रहेंगे, उनकी हमें पहचान होती जाएगी, वैसे-वैसे हमें उनका शुद्ध और प्योर चरित्र समझ में आएगा। महात्माओं के लिए प्योरिटी का अर्थ है, डिस्चार्ज कषाय यानी की क्रोध-मान-माया-लोभ को विलय करने का प्रोसेस। अंतिम ध्येय में खुद के मूल स्वरूप को पहचानकर कषाय और विषय खत्म होते-होते प्योरिटी आएगी और उससे भी आगे डिस्चार्ज अहंकार और बुद्धि खत्म होते-होते, प्योरिटी बढ़ते-बढ़ते ट्रान्सपेरेन्सी आएगी।

महात्माओं को, ज्ञानी की प्योरिटी से भी आगे ट्रान्सपेरेन्सी दशा को *लक्ष* (जागृति) में रखकर वहाँ तक पहुँचने का ध्येय रखना है और जागृतिपूर्वक पुरुषार्थ करना है, जिससे प्योरिटी बढ़े और अंत में इसी जन्म में ट्रान्सपेरेन्सी तक पहुँचा जा सके। अब ज्ञानी पुरुष से भेंट होने के बाद महात्माओं को एक पल भी नहीं गँवाना चाहिए। क्योंकि ऐसा अवसर बार-बार नहीं आता। इसी जन्म में कल्याण के लिए प्योर होने की पुरुषार्थ की श्रेणियों में आगे बढ़ें, यही अभ्यर्थना।

- **जय सच्चिदानंद**

ज्ञानी की दशा, प्योरिटी से आगे ट्रान्सपेरेन्सी

'दादावाणी' सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलत: गुजराती 'दादावाणी' का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेज़ी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश है। यहाँ पर 'आत्मा' शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी 'चंदूभाई' नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। 'दादावाणी' के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें, ताकि भविष्य में सुधार किया जा सकें। ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी है।

साफ नीयत और प्रामाणिकता से प्रगति

प्रश्नकर्ता : आत्मा की प्रगति के लिए क्या करते रहना चाहिए?

दादाश्री : उसे प्रामाणिकता की निष्ठा पर चलना चाहिए। वह निष्ठा ऐसी है कि जब बहुत मुश्किल आ जाए तब आत्मशक्ति का आविर्भाव होता है। प्रामाणिकता एक ही उपाय है।

बाकी, भक्ति से ऐसा कुछ नहीं हो सकता। यदि प्रामाणिकता नहीं हो और भक्ति करें, उसका कोई अर्थ नहीं है। साथ में प्रामाणिकता होनी ही चाहिए। प्रामाणिकता से मनुष्य वापस मनुष्य जन्म प्राप्त करता है और जो लोग मिलावट करते हैं, जो लोग *अणहक़* (अवैद्य) का छीन लेते हैं, *अणहक़* का भोग लेते हैं, वे सभी यहाँ से दो पैर में से चार पैर में जाते हैं और फिर साथ में पूँछ भी मिलती है। उसमें बिल्कुल भी कोई शंका करने जैसा नहीं है।

हर जगह प्रामाणिकता होनी चाहिए। ऐसा कितने समय से प्रामाणिकता जीवन जी रहे हो? कोई भी व्यक्ति जो प्रामाणिकता से जीता है, नैतिक जीवन जीता है, वहाँ चौबीस तीर्थंकरों का निवास होता है। अत: यदि इतना ही शुरु कर दे तब भी बहुत हो गया।

अंदर जिसका जितना शुद्ध, बाहर के संयोग उतने ही सीधे! भीतर जितना मैला, बाहर के संयोग उतने बिगड़े।

यदि साफ नीयत होगी तो सांसारिक काम पूर्ण होंगे और अध्यात्म का काम भी पूर्ण हो सकेगा। जिसकी नीयत अच्छी उसका रेल्वे लाइन एकदम क्लियर! और जिसकी नीयत साफ नहीं होती उसका कोई ठिकाना नहीं होता। उसकी गाड़ी किस गाँव जाएगी कह नहीं सकते! यदि नीयत साफ न हो तो बरकत ही नहीं आती। नीयत साफ यानी कम्प्लीट मोरालिटी सहित सिन्सियरिटी! उसकी तो बात ही अलग न! यदि नीयत साफ है तो इस दुनिया में कुछ भी कठिन नहीं है।

शुद्ध विज्ञान से मुक्ति

प्रश्नकर्ता : मोक्ष में जाने की भावना है, परंतु उस रास्ते में खामी है तो क्या करना चाहिए?

दादाश्री : किस चीज़ की खामी है?

प्रश्नकर्ता : कर्म हैं न? कर्म तो करते ही रहते हैं।

दादाश्री : कर्म किससे बंधते हैं, ऐसा हमें जानना चाहिए न? जो शुभ भाव भी न करे और अशुभ भाव भी न करे, उसे कर्म नहीं बंधते। जिसके शुद्ध भाव हों, उसे कर्म नहीं बंधते। अशुभ भाव से पाप बंधते हैं और शुभ भाव से पुण्य बंधते हैं। पुण्य का फल मीठा आता है और पाप

का फल कड़वा आता है। कोई गालियाँ दें, तब मुँह कड़वा हो जाता है न? और माला पहनाएँ उस समय? मीठा लगता है। शुभ का फल मीठा और अशुभ का फल कड़वा और शुद्ध का फल मोक्ष है!

प्रश्नकर्ता : जीव मुक्ति कब पाता है?

दादाश्री : यदि वह शुद्ध हो जाए तो मुक्ति पाता है। शुद्धता को कुछ भी स्पर्श ही नहीं करता। शुभ को स्पर्श करता है। यह अक्रम मार्ग शुभ का मार्ग ही नहीं है। यह शुद्ध का मार्ग है। यानी कि निर्लेप मार्ग है।

यह 'विज्ञान' है। 'विज्ञान' अर्थात् सब प्रकार से मुक्त करवा देता है। यदि शुद्ध हो गया, तो कुछ भी स्पर्श नहीं करेगा, और शुभ है तो अशुभ स्पर्श करेगा। अर्थात् शुभ वाले को शुभ रास्ता लेना पड़ेगा। अर्थात् शुभमार्गी जो कुछ करते हैं, वह ठीक है, परंतु यह तो शुद्ध का मार्ग है! सभी शुद्ध उपयोगी! इसलिए और कोई झंझट ही नहीं।

शुद्धता लाने के लिए चाहिए ज्ञानी की कृपा

प्रश्नकर्ता : शुद्धता लाने के लिए क्या करना चाहिए?

दादाश्री : करने जाओगे तो कर्म बंधेंगे। 'यहाँ पर' कहना है कि हमें यह चाहिए। करने से तो कर्म बंधते हैं। जो कुछ भी करोगे, शुभ करोगे तो शुभ के कर्म बंधेंगे, अशुभ करोगे तो अशुभ के बंधेंगे और शुद्ध में तो कुछ है ही नहीं। 'ज्ञान' स्वयं ही क्रियाकारी है। खुद को कुछ भी नहीं करना पड़ता।

'खुद' महावीर भगवान जैसा ही आत्मा है, परंतु भान नहीं हुआ न? इस 'अक्रम विज्ञान' से वह भान होता है। फिर चिंता बंद हो जाती है, मुक्त हो जाते हैं! इस ज्ञान से संपूर्ण जागृति उत्पन्न होती है। यह विज्ञान 'केवलज्ञान' है। ऐसा-वैसा नहीं है। इसलिए अपना काम हो जाता है।

प्रश्नकर्ता : आप 'ज्ञानी' हों, आपके बराबर ज्ञान प्राप्त करने के लिए क्या करना चाहिए?

दादाश्री : उनके (ज्ञानी के) पास बैठना चाहिए, उनकी कृपा प्राप्त करनी चाहिए। बस, और कुछ नहीं करना है। 'ज्ञानी' की कृपा से ही सबकुछ होता है। कृपा से 'केवलज्ञान' होता है। यदि करने जाओगे, तब तो कर्म बंधेंगे। क्योंकि 'आप कौन हो?' वह निश्चित नहीं हुआ है। 'आप कौन हो?' वह निश्चित हो जाए तो कर्त्ता निश्चित हो जाता है। जब तक शुद्धता उत्पन्न नहीं होती तब तक मोक्ष नहीं हो पाता। शुद्धता के लिए 'मैं कौन हूँ' उसका भान होना चाहिए।

अक्रम में नहीं देखते बाह्याचार

यह क्रमिक मार्ग क्या कहता है कि पहले बाह्याचार बदलेंगे उसके बाद भाव बदलेंगे तभी मुक्त हो सकते हैं। आप घर पर रहकर कब सर्वांश हो सकोगे और कब आपके बाह्याचार बदलेंगे? वहाँ पर बाह्याचार किस तरह से बदला जा सकता है? अत: यह मार्ग बिल्कुल अक्रम है और साइन्टिफिक (वैज्ञानिक) है और ऐसा है कि कम मेहनत में काम हो जाता है! बाह्याचार हमने अपने ज्ञान में देखा है कि वह तो न्यूट्रल चीज़ है। उसे हमारे ज्ञान में देखने के बाद यह मार्ग दिया है और भगवान की आज्ञा लेकर यह दिया है। अत: बाह्याचार उड़ा दिया है हमने। अंतराचार शुरू हो जाता है, जो अपने आप ही फैलते-फैलते बाहर आकर रहेगा। जबकि क्रमिक मार्ग में बाहर से अंदर जाना है और इस अक्रम

मार्ग में अंदर से साफ होते-होते बाहर आना है। अत: बाह्याचार को नहीं देखना है। बाह्याचार नहीं बदलेगा। क्योंकि वह प्राकृतिक गुण है न!

उसमें बाहर का साफ करके अंदर जाना था। बाहर का साफ होता नहीं और कुछ हो नहीं पाता। इसीलिए तो अनंत जन्मों तक भटकते रहते हैं। इसमें अंदर से साफ करके बाहर आना है। वह आसान है, उससे अपने आप ही बाहर का साफ होता रहता है। आपको कुछ नहीं करना पड़ता। अपने आप ही होता रहता है। आत्मा खुद के स्वभाव में ज्ञाता-द्रष्टा में आ जाए, वह सही चारित्र है। उस चारित्र के बगैर मोक्ष नहीं है।

यह तो अक्रम ज्ञानावतार है! एक घंटे में हम तुझे भगवान पद दे सकते हैं! तेरी पूर्ण तैयारी होनी चाहिए।

'अक्रम विज्ञान' अंदर से करता है शुद्ध

प्रश्नकर्ता : ये ज्ञानी पुरुष तो सभी पर ज्ञान का पानी समान रूप से सींचते हैं, परंतु यदि मेरा नीम हो और दूसरे का आम हो, तो बीज में फर्क पड़ जाएगा न? फिर एक-सा परिणाम किस तरह प्राप्त करेंगे?

दादाश्री : अपने यहाँ तो बीज की कोई परेशानी नहीं है। यहाँ पर तो आपको विनयपूर्वक मुझसे कहना है कि 'साहब, मेरा कल्याण कीजिए।' यहाँ पर परम विनय से मोक्ष है।

यह पाँचवें *आरे* (कालचक्र का बारहवाँ हिस्सा) का पौद्गलिक सड़न है, यह कभी भी 'रिपेयर' नहीं होगा। यहाँ से रिपेयर करो तो वहाँ से टूटेगा और वहाँ से 'रिपेयर' करो तो यहाँ से टूटेगा। इसके बदले तो 'अक्रम विज्ञान' अंदर से शुद्ध कर देता है और आपको अलग रखता है!

शुद्धात्मा दृष्टि से अंदर का शुद्ध होता है

पुद्गल (जो पूरण और गलण होता है) यानी अपना मकान, मैंने इस तरह का उदाहरण दिया कि मकान को आपने पोता, रंग-रोगन किया तो हो गया वह शुद्ध। उसी तरह दादा ने आपको समझाया कि आप 'शुद्धात्मा' हो तो आपकी श्रद्धा बदली। शुद्ध हो गए, वह बात पक्की है लेकिन अब अंदर का सब साफ करना बाकी है।

अत: अब तू अंदर का सारा कचरा निकाल दे। 'मैं शुद्ध हूँ'। रोज़ अँगूठा छूकर बोलता है, 'मैं शुद्धात्मा हूँ', लेकिन अभी हो नहीं गए हो। तब अगर कोई पूछे, 'क्या बाकी है अभी उनका?' तब कहते हैं, 'इस फर्नीचर के नीचे जाले चिपके हुए हैं'। उसके बाद यदि वह कहे, 'वे सभी साफ कर दिए। अब मैं शुद्ध हूँ'। तब कहते हैं, 'नहीं, अभी ये बर्तन हैं न। इन्हें यदि साफ-सुथरा कर दोगे तभी साफ कहा जाएगा, शुद्ध कहा जाएगा'। तो, 'वे भी कर दिए'। उसके बाद हमें कहना है, 'बर्तनों में अभी मिट्टी चिपकी हुई है।' यह सब हो जाने के बाद आप 'शुद्धात्मा' बन जाओगे। यानी कि 'मैं' आत्मा और 'यह' *पुद्गल,* दोनों शुद्ध हो जाएँगे। अत: यदि आप शुद्ध हो जाओगे और 'हम' भी शुद्ध। फिर हम छूट जाएँगे।

शुद्धता की पहचान

जब से वह समझने लगता है कि शुद्धात्मा (मूल आत्मा) को कुछ स्पर्श ही नहीं करता, तभी से 'वह' ('मैं') 'शुद्धात्मा' होने लगता है। लेकिन जब तक ऐसा समझता है कि 'शुद्धात्मा' को स्पर्श करता है, तब तक 'जीवात्मा' रहता है। अब शुद्धात्मा होने के बाद में शुद्धात्मा तो निरंतर शुद्ध ही रहता है, हमेशा के लिए। वह पद हम अपने आसपास वाले के आधार पर देख सकते हैं

कि, ओहोहो! किसी को दु:ख नहीं होता, किसी को ऐसा नहीं हो जाता यानी हम शुद्ध हो गए हैं। जितनी अशुद्धि, उतनी ही सामने वाले को अड़चन और खुद को अड़चन। खुद की अड़चन कब खत्म हो जाती है? जब 'यह' ज्ञान मिलता है तब। और जब खुद से सामने वाले की अड़चन खत्म हो जाए तब हम पूर्ण हो गए।

कचरा निकालने के लिए जागृति

प्रश्नकर्ता : ठीक है। यानी कि आत्मज्ञान मिलने के बाद हमें ही अंदर का ध्यान रखना है।

दादाश्री : आपको देखते रहना है कि वास्तव में यह कितना शुद्ध हुआ और कितना बाकी है!

प्रश्नकर्ता : अब सूक्ष्मता से सारा कचरा निकाल देना है।

दादाश्री : सूक्ष्मता से कचरा नहीं निकाल रहे थे अब तक?

प्रश्नकर्ता : नहीं! नहीं निकाला होगा।

दादाश्री : 'नहीं निकाला होगा' कह रहा है। निकाला ही नहीं। मेरे पास एक भी शब्द बिना तौले नहीं रहेगा। यह तराजू अलग तरह का है! वह कचरा आपको निकालना है या मुझे निकालना है?

प्रश्नकर्ता : आपकी कृपा से हम निकाल देंगे।

दादाश्री : लेकिन ऐसा सभी कुछ देखते ही रहना। सूक्ष्मता से सब देखने के बाद मुझे बताना कि, 'मैं शुद्ध हो गया अब'। यदि बाहरी रंग-रोगन से इतना सुख मिला तो जैसे-जैसे अंदर का शुद्ध करोगे, वैसे-वैसे क्या होगा?

प्रश्नकर्ता : और ज़्यादा सुख होगा।

दादाश्री : पूर्णत: सुख, परमानंद स्थिति! समाधि में रह सकते हैं। इसलिए अब यह सब देखना बारीकी से। अगर मुझे बैठा दे तो पूरी रामायण हो जाए, ऐसा है। पूरी किताब बन जाए। यह संक्षेप में, पाँच मिनट में आपको समझा दिया।

प्रश्नकर्ता : अभी भी ऐसी सूक्ष्म दृष्टि मिल सकती है या नहीं?

दादाश्री : अभी ऐसा कहा है तो सूक्ष्म दृष्टि हो ही जाएगी।

देखते रहो खुद की भूलें सदा

प्रश्नकर्ता : दादा, आपने सच में जागृत कर दिया।

दादाश्री : हाँ, जागृत तो हुए लेकिन यह सब लिख लेना और हर रोज़ पढ़ना। अभी बर्तन रह गए, फलाँ रह गया।

प्रश्नकर्ता : सूक्ष्म रूप से देखते रहेंगे।

दादाश्री : हाँ। वह आपको साफ नहीं करना है। आपको तो ऑर्डर देना है, 'चंदूभाई वह रह गया, अब फलाँ करो। ओ चंदूभाई! वह रह गया, वह करो। मकान को सिर्फ बाहर से पुतवा देने से नहीं चलेगा।' इसलिए आपको बताना है। आपको चंदूभाई को ऑर्डर देना है कि, 'यह कैसा? बाहर से पुतवाने से, रंग-रोगन करवाने से हो गया क्या? अभी तो यह कूड़ा-करकट है, उसे निकालो न!' अब कहना, 'अरे! चंदूभाई क्या कर रहे हो?' आपको चंदूभाई से इस तरह करवाना है। जितना-जितना कहते जाओगे और जितना शुद्ध होता जाएगा, उतना आप भी शुद्ध होते जाओगे। मैंने जो बताया उस साइन्स में भूल नहीं है न?

प्रश्नकर्ता : बिल्कुल भी नहीं है, दादा।

दादाश्री : फर्नीचर साफ हो जाएँगे, बदबूदार बर्तन भी साफ हो जाएँगे। सबकुछ देखते हुए जाएँगे तब फिर पता चलेगा। लेकिन यह तो फर्नीचर साफ होने के बाद जाकर सो गया। कहता है, 'अब ज़रा आराम कर लूँ'। उससे कुछ भला नहीं होगा। इसलिए तो हम बहुत समझाते हैं, लेकिन समझते नहीं हैं न!

दिन भर आपको सिर्फ इसी का ध्यान रखना है कि चंदूभाई क्या कर रहे हैं? आप चंदूभाई से जो कुछ भी कहते हो उसके बाद 'देखना' कि चंदूभाई क्या करते हैं और यदि वे वैसा नहीं करें तो आप कहना, 'अभी ये बर्तन साफ नहीं हुए। अभी फलाँ रह गया'। एक खत्म करते ही तुरंत दूसरा बताना। अत: यदि आपको चंदूभाई की भूलें दिखाई दें और आप चंदूभाई से कहो कि, 'ऐसी भूलें करते हो लेकिन अब सुधार लो', तभी तो वह सुधरेगा, वर्ना नहीं सुधारेगा।

उपयोग चुकाए, वह है कचरा

प्रश्नकर्ता : अब, कचरा यानी कौन सा कचरा?

दादाश्री : सब में कचरा ही है। सारा कचरा ही पड़ा है। जो हमें मूल वस्तु पर, 'मैं शुद्धात्मा हूँ' ऐसा उपयोग नहीं रखने देता, वह सारा कचरा ही है।

प्रश्नकर्ता : कचरा यानी मन-वचन-काया-चित्त-बुद्धि-अहंकार ही न?

दादाश्री : ये अहंकार-मन-वचन-काया सब एक ही हैं। हाँ, एक ही चीज़ के बने हुए हैं। लेकिन उसमें थोड़ा मिक्स्चर है अपना, पावर घुस गया है आत्मा का। सिर्फ पावर ही। जैसे कि सेल एक ही चीज़ से बना हुआ है, उसमें बाहर का पावर घुस गया है इसलिए लाइट देता है। पावर निकल जाए तो कुछ भी नहीं है। वह तो वैसा ही है।

प्रश्नकर्ता : यानी जो शुद्ध उपयोग में नहीं रहने देतीं, वे सभी चीज़ें कचरा हैं?

दादाश्री : हाँ! अब मैं कब तक दिखाता रहूँ, अब आपको देखना है। जो बर्तन बदबू मार रहे हैं, वे फफूंद वाले हैं। बदबूदार बर्तनों में कोई खाता है क्या? उन्हें उतना साफ करना है। एक बार पूरी तरह से शुद्ध कर दो। मैं आपको कब तक बताता रहूँ?

प्रश्नकर्ता : नहीं, दादा। हमने लिख लिया है कि घर में से सावधानीपूर्वक सारा कचरा निकाल देना है।

दादाश्री : इस गहन बात में आपका दिमाग़ नहीं चलेगा। यह बात समझ रहे हो न? जानते हो न, ऐसी गहन बातों को? यह तो ज्ञानी का काम है न! इसलिए यह लिख लेने जैसा है, फिर वही आपका सब काम कर लेंगी। ऐसा कहा था ताकि भूल न जाओ। अगर लिख लोगे और रोज़ पढ़ोगे तो जागृति रहेगी कि, 'अब क्या-क्या बाकी रहा?' जाँच करो। जाँच करने से पता चलेगा। अंदर से भगवान ने कहा है कि, 'बता दो सब को। फिर कब तक ज़िम्मेदारी रखोगे?'

मैं दिखाने नहीं आऊँगा। आपको ही दिखाना है। मुझे अब फिर से नहीं कहना पड़ेगा न? अब मुझे कहने नहीं आना पड़ेगा। आपको ही कहना है, 'चंदूभाई ऐसे करो, ऐसे करो'। यह कचरा

आपको रेग्युलर नहीं रहने देता। इसलिए अगर घर में कचरा है तो 'आपको' 'इन्हें' कह देना है कि 'चंदूभाई, देखो अभी भी कचरा है'। तब चंदूभाई कहेंगे, 'आपके शुद्ध होने से मुझे क्या फायदा?' तो कहना, 'इतना निश्चित है कि अगर हम शुद्ध हो गए तो आपका भी सब ठीक हो जाएगा। इसकी गारन्टी है!'

प्रश्नकर्ता : शुद्ध तो हमें चंदूभाई को ही करना है न?

दादाश्री : हं। 'आप' तो शुद्ध हो ही। आप शुद्धात्मा ही हो। अब चंदूभाई क्या कहते हैं कि 'मैं भी शुद्ध हो गया हूँ'। तब कहना, 'नहीं! बाहर से सब धुल गया है लेकिन अभी तो अंदर बहुत कचरा पड़ा हुआ है, उसे साफ कर दो तो शुद्ध हो जाओगे!'

आंतरिक प्यॉरिटी ही बाह्य प्यॉरिटी लाती है। अंतर में से ही बाहर आती है।

जहाँ परमाणु में राग-द्वेष नहीं वहीं प्योरिटी

प्रश्नकर्ता : दादा, प्योरिटी अर्थात् क्या?

दादाश्री : किसी भी परमाणु में राग न हो, राग-द्वेष न हो, प्योर हो।

प्रश्नकर्ता : प्योरिटी की शुरुआत कैसे होती है?

दादाश्री : यह शुरुआत ही है न! क्या आपको खुद को लग रहा है कि प्योरिटी हो रही है?

प्रश्नकर्ता : हो रही है ऐसा लगता है! अर्थात् दादा के प्रति जितनी सिन्सियरिटी हो तो उसके परिणाम स्वरूप प्योरिटी आती है?

दादाश्री : प्योर को याद करने से प्योरिटी आती है और इम्प्योर को याद करने से तो इम्प्योर हो जाओगे।

प्रश्नकर्ता : दादा प्योर हैं इसलिए उनकी भजना करने से उनके जैसे ही प्योर होते जाएँगे!

दादाश्री : उस रूप बनते जाएँगे। जिसकी भजना करे न, उस रूप। यदि जेब कतरे की भजना करे तो जेब कतरा बन जाता है। फर्स्ट क्लास जेब कतरा बन जाएगा। उसे सिखलाना नहीं पड़ता, उसका कोई कॉलेज़ नहीं होता। वहाँ, कॉलेज़ में मास्टर को ही नहीं आता!

आंतरिक प्योरिटी ही लाए बाह्य प्योरिटी

प्रश्नकर्ता : यह तो बहुत ही बड़ी बात है जो कहा कि 'राग का एक भी परमाणु नहीं है!'

दादाश्री : हाँ। यदि एक भी परमाणु होता तब तो फिर वह सम्यक् दृष्टि कैसे हो सकती है? हाँ। और नहीं तो क्या! आप सम्यक् दर्शन वाले हो।

मैंने जो सम्यक् दर्शन दिया है, हंड्रेड परसेन्ट सही है और इसमें जो लिखा हुआ है, वह भी सही है तो यह ढूँढ निकालो कि भूल किसकी है। अब आप चंदूभाई हो या शुद्धात्मा हो?

प्रश्नकर्ता : शुद्धात्मा।

दादाश्री : तो शुद्धात्मा में राग-द्वेष का एक भी परमाणु नहीं बचा है। अत:आपको संपूर्ण रूप से शुद्धात्मा बना दिए हैं। इस जगत् के पास जो ज्ञान-दर्शन है, वह राग-द्वेष वाला है। वह अशुद्ध है, राग-द्वेष सहित है और जो राग-द्वेष रहित है, उसे शुद्ध ज्ञान कहा जाता है।

सदा रहे प्योर दादा का खिंचाव

प्रश्नकर्ता : दादा से मिलने से पहले जीवन जीना नहीं आता था, दादा से मिलने के बाद अब जीना सीख रहे हैं।

दादाश्री : हाँ, मिलने के बाद अब अच्छा हो गया क्योंकि ज्ञानी पुरुष शुद्ध हैं। प्योर हैं इसलिए उन पर भाव आएगा ही।

प्रश्नकर्ता : हाँ, उनके लिए भाव आते हैं।

दादाश्री : प्योर हैं न!

प्रश्नकर्ता : हाँ, दादा को देखने के बाद किसी को तृप्ति होती ही नहीं है। यहाँ से वहाँ गए तो वापस पैर खींच ले आते हैं।

दादाश्री : ठीक है, लेकिन ऐसा सब सहज रूप से ही रहता है। यह सब प्योर है न! हर बात में प्योरिटी!

प्रश्नकर्ता : हाँ, प्योर। हर बात में प्योर हैं, दादा।

दादाश्री : विषय-कषाय रहित कहलाते हैं न! जिसके आधार पर यह संसार खड़ा है, उससे रहित कहे जाते हैं न! अर्थात् पारदर्शक!

प्योरिटी से भी आगे पारदर्शक

प्रश्नकर्ता : प्योरिटी(शुद्ध) और पारदर्शक, इन दोनों में क्या फर्क है?

दादाश्री : प्योरिटी से भी आगे पारदर्शक है। जब प्योरिटी बढ़ जाती है तब फिर वह पारदर्शक बन जाता है।

अर्थात् मन में कोई विचार ही नहीं आते। किसी के अहित के लिए, किसी भी जीव के लिए, किंचित्मात्र भी हिंसा के विचार ही नहीं आते हैं। बुद्धि भी इतनी सरल रहती है। डिस्चार्ज अहंकार भी अच्छा चलता है लेकिन वह सारा डिस्चार्ज है न, धीरे-धीरे, जाते-जाते खत्म होगा तब वह पारदर्शक बनेगा।

प्रश्नकर्ता : दादा, ऐसा एकदम से नहीं हो सकता?

दादाश्री : एकदम से तो किसी को भी नहीं हो सकता न!

हमारा मन ब्रह्मांड का भार उठा ले, ऐसा है। यदि आप हमारे साथ बैठे रहो तो आपका मन भी वैसा ही हो जाएगा। लेकिन आप बैठोगे नहीं न! पक्के लोग! घर पर डॉलर की दीवार बनाने जाओगे न! डॉलर की दीवार बनाते हैं। यदि दादा के मन जैसा मन हो जाए न, तो काम हो जाएगा। पूरी दुनिया का भार उठा ले!

पारदर्शकता से दिखाई देता है, जैसा है वैसा

हमें तो पूछते हैं कि 'आपको यह सब पता कैसे चलता है?' तो, हमें दिखाई देता है। आप पूछो कि, 'उस दिन हम यात्रा में गए थे और ऐसा हुआ था, वह ठीक है या नहीं?' तब मैं कहता हूँ कि, 'वह ठीक है।' लेकिन हम देखकर बताते हैं। जबकि आप याद रखा हुआ बताते हो। बोलते ही हमें यों दिखाई देता है। एक्ज़ेक्टनेस, 'जैसा है वैसा' हमें दिखाई देता है।

प्रश्नकर्ता : सारा दर्शन में आ जाता है?

दादाश्री : दर्शन में नहीं, यों एक्ज़ेक्ट दिखाई देता है।

प्रश्नकर्ता : दर्शन में किससे दिखाई देता है, चित्त से?

दादाश्री : साफ-साफ, क्लियर दिखाई देता है। पूरा ही ट्रान्सपेरेन्ट (पारदर्शक) है। पूरा, बिल्कुल प्योर।

ज्ञानी पुरुष तो पारदर्शक कहे जाते हैं। वे तो आईना हैं। ज्ञानी पुरुष में सभी प्रकट हो चुके होते हैं। यदि वे आईने में नानक साहब को देखें तो नानक दिखाई देंगे, कृष्ण को देखें तो कृष्ण दिखाई देंगे। जिन्हें जो भगवान देखने हों वे ज्ञानी पुरुष में दिखाई देंगे। उनमें खुदा भी दिखाई देंगे, महावीर भी दिखाई देंगे। जिसे जिस दृष्टि से देखना हो वैसा दिखाई देगा।

तू पुस्तक नहीं पढ़ेगा और कुछ नहीं समझेगा तो भी मुझे हर्ज नहीं है, परंतु तू निखालिस बन, सच्चा निखालिस बन। फिर निखालिस को शोभा दे, वैसा सारा ज्ञान अपने आप ही उद्‌भव हो जाएगा।

निखालिस अर्थात् बिल्कुल प्योर, ट्रान्सपेरेन्ट

प्रश्नकर्ता : निखालिस के बारे में ज़रा स्पष्ट समझाइए।

दादाश्री : निखालिस यानी एकदम 'प्योर' मनुष्य होता है। वह मनुष्य, मनुष्य नहीं होता, सुपरह्युमन हो तभी निखालिस हो सकता है। निखालिस तो एकदम 'प्योर', 'ट्रान्सपेरेन्ट' जैसा होता है। उसे एक भी विचार 'इम्प्योर' नहीं आता। वैसा तो होता ही नहीं न कहीं भी। स्वरूप ज्ञान मिलने के बाद धीरे-धीरे वैसा बनता जाता है।

प्रश्नकर्ता : व्यवहार में निखालिस मनुष्य का लोग गलत फायदा उठाते हैं न?

दादाश्री : नहीं। जो गलत फायदा लेने आया होगा, वह सौ फुट दूर से ही अंदर नहीं आ सकेगा। उसकी शक्ति ही टूट जाएगी, फ्रेक्चर हो जाएगी।

प्रश्नकर्ता : निखालिस अर्थात् स्व-स्वरूप में रहे वह?

दादाश्री : स्व-स्वरूप में तो हम ज्ञान दें तो आप भी रहते हो, परंतु वह निखालिसता नहीं कहलाती। निखालिस को संसार का एक भी विचार नहीं आता, हृदय एकदम प्योर होता है। आपको अभी भी विचार आते हैं, उनमें तन्मयाकार हो जाते हो। घर के विचार आएँ, व्यापार के आएँ, विषयों के आएँ, दूसरे सभी प्रकार के विचार आएँ, तब तक मनुष्य ट्रान्सपेरेन्ट नहीं हो सकता।

प्रश्नकर्ता : निखालिस मनुष्य को किसके विचार आते हैं?

दादाश्री : उन्हें विचार ही नहीं होते। उनका मन घूमता ही रहता है। समय-समय अर्थात् समयवर्ती हो चुका होता है।

निखालिस पुरुष की सिद्धियाँ असीम होती हैं। परंतु वे उनका उपयोग नहीं करते। अंत में आपको भी ऐसा ही निखालिस होना पड़ेगा न?

निखालिस हो गए अर्थात् दुनिया का कोई भी डर रखने की ज़रूरत ही नहीं होती। उसका तो 'ओटोमेटिकली' रक्षण होता रहता है, उसका कोई भक्षण कर ही नहीं सकता। स्वरूपज्ञान मिलने के बाद उसकी पूर्ण दशा उत्पन्न होगी, तब कोई भी भक्षण नहीं कर सकेगा, कोई नाम भी नहीं दे सकेगा।

प्रश्नकर्ता : व्यवहार में निखालिस हों तो बहुत तकलीफ होती है।

दादाश्री : निखालिस कोई हो ही नहीं

सकता न! आत्मज्ञान होने के बाद ही निखालिस बनते हैं।

प्रश्नकर्ता : निखालिस हों तो व्यवहार में बुद्धू माने जाते हैं।

दादाश्री : बुद्धू निखालिस होते ही नहीं। लोग बुद्धू को ही निखालिस कहते हैं। निखालिस तो अलग ही होता है। हर एक विषय में वह निखालिस होता है, एक-दो में नहीं।

बनो असामान्य इंसान

ऐसे सामान्य व्यक्ति की तरह कब तक बैठे रहेंगे? मुझे तेरहवें साल में असामान्य होने का विचार आया था। सामान्य अर्थात् सब्ज़ी-भाजी, वैसा मुझे लगा था। सामान्य व्यक्ति को जो तकलीफ पड़ती है, वैसी कोई तकलीफ असामान्य मनुष्य को नहीं पड़ती। सामान्य मनुष्य किसी को हेल्प नहीं कर सकता। जबकि असामान्य मनुष्य हेल्प के लिए ही होता है। इसलिए ही उसे जगत् एक्सेप्ट करता है।

प्रश्नकर्ता : असामान्य मनुष्य की परिभाषा क्या है?

दादाश्री : असामान्य अर्थात् खुद जगत् के सभी लोगों को, हर एक जीवमात्र के लिए हेल्पफुल हो जाए। खुद स्वतंत्र हो जाए, प्रकृति से पर हो जाए, तब असामान्य बनता है। सामान्य मनुष्य लाचारी भी अनुभव करता है, तीन दिनों तक भूखा रखे तो लाचारी अनुभव करता है। इसलिए असामान्य बनें फिर तो खुद के सुख की सीमा नहीं रहेगी।

अभी कोई बड़ा व्यक्ति आपको दिखे तो आपको लघुताग्रंथि उत्पन्न हो जाती है, आप एकदम प्रभावित हो जाते हो। अरे! वो सामान्य व्यक्ति ही है, फिर उससे क्या प्रभावित होना?

त्याग और पवित्रता के कारण आकर्षण

प्रश्नकर्ता : कई बार ऐसा लगता है कि आपके पास कोई वशीकरण है? कोई ऐसी शक्ति है जिससे आप सभी को खींचकर रखते हैं?

दादाश्री : नहीं, मुझ में तो कोई शक्ति ही नहीं है। मुझे तो जुलाब के लिए चूर्ण लेना पड़ता है। मुझ में कोई शक्ति नहीं है। यह ट्रान्सपेरेन्ट हो चुका है! इसमें किसी भी प्रकार की मोहनिद्रा नहीं है या किसी भी प्रकार का कोई त्याग बाकी नहीं रहा है। अत: जिसे जो त्याग करना हो, वह दादा के आश्रय में रहकर कर सकता है। क्योंकि यदि आप में त्याग होगा तभी सामने वाला त्याग कर सकेगा। जब तक आप में त्याग न हो, मन में, मानसिक रूप से भी वह हो तब तक सामने वाला कमज़ोर पड़ जाएगा। यह तो, मन-वचन-काया से संपूर्ण रूप से त्याग बरतता है, बिल्कुल ट्रान्सपेरेन्ट है, उसी का यह सब आकर्षण है, क्या है?

दादा में इतना अधिक त्याग बरतता है कि सभी प्रकार के जीव यहाँ खिंचकर आएँगे। इन दादा का एक-एक अंग त्याग वाला है, एक-एक अंग पवित्र है इसलिए फिर उसके हिसाब से सभी खिंचकर आ जाएँगे।

दादा के सानिध्य में बरते समाधि

प्रश्नकर्ता : दादा के पास बैठने से शांति हो जाती है और संसार भाव छूट जाते हैं, यह कैसे संभव होता है? वह शक्ति है न, दादा की?

दादाश्री : वह दादा की शक्ति नहीं है। जैसे बर्फ के पास बैठने से स्वभाव से ही ठंडक

लगती है, उसमें बर्फ की शक्ति नहीं है। वर्ना, बर्फ भी चीख-पुकार करता कि 'अरे! आपको कैसी ठंडक दी मैंने! अरे, तू क्या ठंडा कर करता! वह तो तेरा स्वभाव है। अत: हमारे स्वभाव से ही होता है।

हम में विषय का एक भी परमाणु नहीं है, एक भी परमाणु ममता का नहीं। अत: फिर जहाँ ममता है ही नहीं, अहंकार नहीं है, वहाँ और क्या होगा? इसलिए जो 'इनके' साथ बैठेगा, उसका तो कल्याण ही हो जाएगा न!

सिर्फ ज्ञानी पुरुष ही ट्रान्सपेरेन्ट

सिर्फ ज्ञानी पुरुष वर्ल्ड के प्योर बॉडी हैं। पूरे संसार में प्योरेस्ट बॉडी, ट्रान्सपेरेन्ट, कोई इंसान ट्रान्सपेरेन्ट नहीं हो सकता। सिर्फ ज्ञानी पुरुष ही ट्रान्सपेरेन्ट हैं।

'ज्ञानी पुरुष' को वर्ल्ड में कोई ऐसी चीज़ नहीं है कि जो हम दें तो काम में आए। क्योंकि उन्हें किसी भी चीज़ की भीख ही नहीं होती। उन्हें लक्ष्मी की भीख नहीं होती, कीर्ति की भीख नहीं होती, विषयों की भीख नहीं होती, मान की भीख नहीं होती, जिसे किसी प्रकार की भीख नहीं है, वे निर्वासनिक कहलाते हैं, निरीच्छक, ऐसे 'ज्ञानी पुरुष', जिनके दर्शन मात्र से ही पाप धुल जाते हैं! उनके पास बैठने से अपार शांति का अनुभव होता है।

जिसे कुछ चाहिए, वह दखल करता है। हमें कुछ चाहिए ही नहीं। एक व्यक्ति कहता है, 'दादा भगवान बहुत से लोगों को निरंतर क्यों याद रहते हैं?' सारा ट्रान्सपेरेन्ट है, इसलिए। कोई भी ट्रान्सपेरेन्ट चीज़ आरपार देख सकती है। जैसे गोपियों को कृष्ण भगवान निरंतर याद रहते थे न? वैसा ही अपने यहाँ है! अपने यहाँ कम से कम तीस हज़ार लोग ऐसे होंगे, जिन्हें रात-दिन दादा याद ही रहते हैं। अपने आप ही, उन्हें याद नहीं करना पड़ता!

सिर्फ, एक ही दिन की पहचान हो, तब भी हर समय याद रहते हैं।

हमेशा पिताजी के साथ रहते हुए भी पिताजी याद नहीं आते। क्योंकि याद किस चीज़ की आएगी? तो, जो पारदर्शक हो, वही याद आएगी। अन्य कोई चीज़ याद नहीं आती। याद आना तो बहुत मुश्किल है! जो चीज़ पारदर्शक हो वही याद आती है, वर्ना स्मरण करना पड़ता है।

स्मरण अर्थात् भूले हुए को याद करना जबकि पारदर्शक अर्थात् याद ही रहता है। अत: पारदर्शक होने की ज़रूरत है। ये पूरा संसार आपको, जो माँगो वह देने को तैयार है लेकिन उस दिन आप माँगोगे नहीं क्योंकि भीख खत्म हो चुकी होगी। जब भिखारी हों तब देते नहीं हैं। जब भीख मिट जाती है तब देने को तैयार हो जाते हैं लेकिन तब भीख नहीं रहती!

दादा निर्दोष हैं, स्वच्छ हैं, ट्रान्सपेरेन्ट हैं इसलिए सभी को प्रेम आता है।

हर दिन महात्मा सीमंधर स्वामी से दादा के लिए माँगते रहते हैं वह भी सभी का प्रेम ही हैं न! प्रेम से बंधा हुआ छुटता नहीं।

हमारा मन प्योर है, बुद्धि प्योर है, अहंकार प्योर हैं। हम प्योरिटी के शिखर पर बैठे हैं। आपको भी ऐसे प्योर तो बनना पड़ेगा न?

अब, दादा निरंतर याद रहते हैं न! बस फिर। कोई परेशानी ही नहीं न!

प्रश्नकर्ता : हाँ, हाँ, हमें प्योरिटी वाले ज़्यादा *लक्ष* (जागृति) में रहते हैं।

दादाश्री : प्योरिटी वालों का तो खिंचाव रहेगा ही। जबकि पैसे वालों का तो रहे या न भी रहे। बड़े लोग तो वहाँ बहुत हैं लेकिन उन सभी में मेरा ध्यान ज़्यादा नहीं रहता। मैं तो प्योरिटी वाले को पहचानता हूँ।

प्रश्नकर्ता : उनका आकर्षण रहता है, प्योरिटी वालों का आकर्षण रहता है।

दादाश्री : अब, मुझे और क्या चाहिए? यदि उन्हें देना होगा तो वे अगले जन्म के लिए देंगे लेकिन मुझे नहीं चाहिए। मुझे अपने लिए कुछ नहीं चाहिए। यानी कि मुझे खुद के लिए कुछ चाहिए ही नहीं न!

ज्ञानी जीते हैं सामने वाले की अनुकूलता के लिए

खुद अपने आपके, व्यक्तिगत कारण से नहीं, आपके लिए। मैंने क्या तय किया है कि 'जो मैंने सुख पाया है, वही सुख दूसरे भी पाएँ'। यह तो, मुझे गर्ज़ है कि ये लोग सुख पाएँ, मोक्ष में जाएँ।

खुद का सुख नहीं, लेकिन सामने वाले की अड़चन कैसे दूर हो, यही रहा करे, वहाँ से कारुण्यता की शुरुआत होती है। हमें बचपन से ही सामने वाले की अड़चन दूर करने की पड़ी थी। खुद के लिए विचार भी नहीं आए, वह कारुण्यता कहलाती है। उससे ही 'ज्ञान' प्रकट होता है।

प्रश्नकर्ता : हमने दादा में ऐसा देखा हैं कि दादा में खुद का किंचित्मात्र भी 'मेरापन' नहीं है और दादाजी हमेशा सामने वाले की अनुकूलता ही देखते हैं।

दादाश्री : धीरे-धीरे आपका भी 'मेरापन' खत्म हो जाएगा।

प्रश्नकर्ता : हमने ज्ञानी पुरुष का ऐसा देखा है तो क्या हमारा भी 'मेरापन' खत्म हो जाएगा?

दादाश्री : अहंकार खत्म हो ही चुका है न! जब तक अहंकार है तब तक 'मेरापन' का रक्षण है। वे ज्ञानी पुरुष का खत्म हो चुका हुआ 'मेरापन' देखते हैं।

प्रश्नकर्ता : 'मेरापन' अर्थात् खुद अपनी प्रकृति का रक्षण करना?

दादाश्री : *पुद्गल* का रक्षण करना।

प्रश्नकर्ता : 'दादाजी ने कभी भी खुद की अनुकूलता नहीं देखी है, हमेशा सामने वाले की प्रतिकूलता को देखकर, उसे ही अनुकूल हुए हैं।' हर एक इंसान खुद की ही अनुकूलता देखता है। फिर चाहे दूसरों को कैसी भी प्रतिकूलता होती हो, मेरी अनुकूलता रहनी चाहिए। मेरा बिस्तर कहाँ है? मुझे खाना क्यों नहीं मिला?

दादाश्री : यह 'मेरापन' है इसलिए वह क्या करेगा? यदि यहाँ से जाना हो तो वह किसी का नहीं मानेगा, खुद का कहा हुआ ही करवाएगा।

कभी नहीं समझते पराई चीज़ को खुद की

अब हमें देह से कह देना है कि 'यदि तुझे जाना है तो जा, हम अपने घर में रहेंगे।' उसके लिए बहुत चिंता मत करना। अनंत जन्मों से देह की ही देखभाल करते रहे हैं। यदि एक जन्म के लिए इस देह को ज्ञानी पुरुष को सौंप दें और यदि उसकी देखभाल नहीं करें तो हो गया, साफ हो गया। हमने तो एक क्षण के लिए भी इस देह की देखभाल नहीं की है। यह देह

हमारी है, ऐसा हमने एक क्षण के लिए भी नहीं माना। यह ज्ञान प्रकट होने के बाद वह हमारी है ही नहीं, वह तो पराई चीज़ है। ऐसी पराई चीज़ अपने हाथ में नहीं रहेगी और हमें चाहिए भी नहीं। खुद की 'वस्तु' वह खुद की, पराई वह पराई!

प्योरिटी से पुद्गल बनता है ट्रान्सपेरेन्ट

प्रश्नकर्ता : यह कितनी ज़्यादा प्योरिटी कहलाती है?

दादाश्री : यह तो प्योरिटी ही है, यह तो प्योर ही है, वर्ना याद ही नहीं रहते। नहीं तो, फिर स्मरण करना पड़ता है। स्मरण किया हुआ विस्मृत हो जाता है। जबकि यह विस्मृत होता ही नहीं, याद ही आता रहता है। जितनी प्योरिटी उतने वे याद रहेंगे। जो व्यक्ति खुद प्योर हैं, वे लोगों के हृदय में बैठ जाते हैं। याद ही रहा करते हैं। उसका रक्षण करते हैं। निरंतर याद रहते हैं वह, प्योरिटी के आधार पर। ट्रान्सपेरेन्ट शक्ति! *पुद्गल* ट्रान्सपेरेन्ट हो जाता है।

प्रश्नकर्ता : वह सामने वाले के हृदय में पैठ जाता है इसलिए उसका हृदय परिवर्तन कर देते हैं?

दादाश्री : परिवर्तन तो हो ही चुका होता है। तभी वहाँ पैठते हैं। याद कब रहेंगे? जब परिवर्तन होगा तब।

अक्रम में तीन सौ छप्पन डिग्री पर ट्रान्सपेरेन्सी

प्रश्नकर्ता : दादा, अक्रम में तीन सौ छप्पन डिग्री होने के बावजूद भी ट्रान्सपेरेन्ट है?

दादाश्री : ट्रान्सपेरेन्ट, बिल्कुल हंड्रेड परसेन्ट ट्रान्सपेरेन्ट! अंदर तीन सौ साठ और बाहर तीन सौ छप्पन। जबकि वहाँ (क्रमिक में) अंदर तीन सौ साठ और बाहर तीन सौ उनसठ हो तब भी ऐसा नहीं रह सकता। जबकि 'ये' तीन सौ छप्पन हैं, फिर भी रहता है।

प्रश्नकर्ता : उन लोगों में तीन सौ उनसठ या तीन सौ साठ तक पहुँचा ही नहीं होता। जबकि यहाँ तीन सौ साठ तक जाकर फिर उतर गया।

दादाश्री : यदि तीन सौ साठ का स्पर्श होगा तभी हो सकेगा। यहाँ इसमें अहंकार ही नहीं होता। कर्तापद और भोक्तापद, दोनों का ही अहंकार नहीं रहता।

अत: यह आश्चर्य है! दिस इज़ द वन्डर ऑफ द वर्ल्ड! एक-एक शब्द याद रहता है। तीन सौ उनसठ वाले (क्रमिक के) ज्ञानी के शब्द हों न, वे याद नहीं रहते, याद करने पड़ते हैं क्योंकि वहाँ प्योरिटी नहीं है। यहाँ तो ट्रान्सपेरेन्ट कहे जाते हैं, भले ही तीन सौ छप्पन है फिर भी, तीन सौ सत्तावन ट्रान्सपेरेन्ट, तीन सौ अठावन ट्रान्सपेरेन्ट, तीन सौ उनसठ ट्रान्सपेरेन्ट, तीन सौ साठ हो जाए तो दोनों एक ही हैं। तब तक जुदा रहेंगे। थोड़ा समझ में आया आपको? कितना आश्चर्य है! और आप सभी को प्राप्त हो गया, वह भी कितना बड़ा आश्चर्य!

जागृति भूलों के सामने, ज्ञानी की

हमारी जागृति 'टॉप' की होती है। आपको पता भी न चलता, पर आपके साथ बोलते समय जहाँ हमारी भूल होती है, वहाँ हमें तुरंत पता चल जाता है और तुरंत उसे धो डालते हैं। उसके लिए यंत्र रखा हुआ होता है, जिससे तुरंत ही धुल जाता है। हम खुद निर्दोष हुए हैं और पूरे जगत् को निर्दोष ही देखते हैं। अंतिम प्रकार की

जागृति कौन-सी कि जगत् में कोई दोषित ही नहीं दिखे, वह। हमें ज्ञान के बाद हज़ारों दोष रोज़ के दिखने लगे थे। जैसे-जैसे दोष दिखते जाते हैं, वैसे-वैसे दोष घटते जाते हैं और जैसे दोष घटते हैं, वैसे जागृति बढ़ती जाती है।

अब हमारे सिर्फ सूक्ष्मतर और सूक्ष्मतम दोष बचे हैं, जिन्हें हम 'देखते' हैं और 'जानते' हैं। वे दोष किसी को बाधा रूप नहीं होते, पर काल के कारण वे अटके हैं। और उससे ही तीन सौ साठ डिग्री का 'केवलज्ञान' रुका हुआ है। और तीन सौ छप्पन डिग्री पर आकर रुक गया है! इस काल में रिलेटिव पूर्णता तक जाया जा सके, वैसा नहीं है। पर हमें उसमें हर्ज नहीं है क्योंकि अंदर अपार सुख बरतता रहता है।

व्यवहार शुद्धि से प्योरिटी

प्रश्नकर्ता : दादा, यहाँ आपके पास आने के बाद हमारी दृष्टि सीधी हो गई है।

दादाश्री : सीधी हो ही जाती है। सारी मलिनता निकल जाती है। क्योंकि मैं बिल्कुल प्योर हूँ। मेरे टच में आने पर प्योरिटी हो ही जानी चाहिए। जहाँ प्योरिटी नहीं होती वहाँ हर कहीं फँसे थे वह देख लिया कि इनकी वजह से मेरी प्योरिटी नहीं हुई अत: वे इम्प्योर लगते हैं। वर्ना मेरी क्यों नहीं निकलती?

प्रश्नकर्ता : कोई दोषित नहीं हैं। हम ही दोषित हैं। ऐसी दृष्टि हो जाती है।

दादाश्री : सही बात है। अगर दादा के एक शब्द भी तुम्हें समझ में आ जाए न, तो भी बहुत हो गया। और यदि प्रतीति में आ गया तब तो कल्याण हो गया। पहले समझ में आएगा और फिर प्रतीति में आता जाएगा।

भगवान ने सब को निर्दोष देखा था। किसी को उन्होंने दोषित देखा ही नहीं और हमारी वैसी शुद्ध दृष्टि हो जाएगी, तब शुद्ध वातावरण हो जाएगा।

प्योर हार्ट वहीं पर एकता

एकता आ गई वह 'हार्ट की प्योरिटी' (हृदय की शुद्धता) कहलाती है। मुझे सभी के साथ एकता रहती है। क्योंकि हार्ट 'प्योर' ही है न! मुझे तो सभी अभेद ही लगते हैं। और खुद का जो एफिडेविट लिखता है, वह एक भी दोष लिखने का बाकी नहीं रखता। पंद्रह साल की उम्र से लेकर चालीस साल की उम्र तक के हुए, सारे दोषों को मेरे सामने उजागर कर देते हैं। ये लड़के-लड़कियाँ सबकुछ कह देते हैं, उसका क्या कारण है?

प्रश्नकर्ता : आपकी प्योरिटी है।

दादाश्री : वही प्योरिटी है। वे सबकुछ कह देते हैं। उसके बाद मैं विधि कर देता हूँ और उसका काग़ज़ उन्हें वापस कर देता हूँ।

तीर्थंकरों ने क्या कहा था? आलोचना-प्रतिक्रमण और प्रत्याख्यान। हमारे यहाँ आलोचना हो गई तो हो गया। उसके बाद कोई *ऊपरी* (बॉस) ही नहीं है कि जो मंजूर कर सके सिर्फ यहाँ पर ही मंजूरी है। यहाँ मंजूर हो गया तो फिर तू अपने आप प्रतिक्रमण कर लेना और प्रत्याख्यान भाव रखना कि दोबारा ऐसा नहीं करना है।

प्योरिटी प्राप्त करवाती है, निर्भय पद

प्रश्नकर्ता : दादा, आपने एक बात ऐसी कही थी, 'जो बिलकुल प्योर है, उसे इस संसार में भगवान भी डरा नहीं सकते।'

दादाश्री : बल्कि भगवान डरते रहते हैं।

क्योंकि भगवान किसे ढूँढते हैं? प्योर को ढूँढते हैं और प्योर मिलते नहीं हैं इसलिए जब दो-चार जो दिखाई देते हैं तब कहेंगे कि, 'यदि मैं ज़्यादा कड़क बन जाऊँगा तो वे चले जाएँगे' इसलिए वे डरते रहते हैं। अत: प्योर बनो। मेरा क्या कहना है? भगवान बनने की ज़रूरत नहीं है, प्योर बनो। भगवान भी डरते हैं। मैंने देखा है, मुझ से डरते हुए। कितनी ही बार डरते हुए देखा है न?

महात्मा : बहुत।

दादाश्री : क्योंकि प्योर बनो, मेरा कैसा है? जिनका एक-एक मिनट ओपन टू स्काई है। अत: मेरी तो प्योरिटी है, कम्प्लीटली प्योरिटी, जिसमें कोई एक बाल बराबर भी (कमी) नहीं निकाल सकता। तो ढूँढने जैसा रहा ही कहाँ? आप भी ऐसा बनने का प्रयत्न करो, भाव करो।

प्रश्नकर्ता : भाव करना है?

दादाश्री : हाँ, जब कोई आप से कहे कि, 'मैं ऐसे बन गया हूँ' तब फिर आपके मन में वैसा भाव हुआ तो आप भी वैसे बन सकते हैं। यह ज्ञान मिलने के बाद सबकुछ हो सकता है। यदि ज्ञान नहीं मिला होता तो आप नहीं बन सकते। क्योंकि ज्ञान मिलने के बाद दृष्टि ही बदल गई है और दृष्टि बदलने के बाद स्व-पुरुषार्थ उत्पन्न होता है। यथार्थ पुरुषार्थ उत्पन्न होता है। अत: जितना पुरुषार्थ कर सकते हो, उतना करो।

आँखों से पहचानी जाती है प्योर वीतरागता

मेरा कहना है कि इन्हें जितना प्योर रखोगे उतना ही इस संसार के लिए लाभदायक होंगे। मेरे मन में कोई इच्छा ही नहीं है न! मुझे तो यदि फटी धोती हो तो वह भी चलेगी परंतु पूर्व का कोई ऐसा हिसाब लाया हूँ कि बचपन से ही मेरे कपड़े जैसे के वैसे हैं, वे बदलते ही नहीं है। अपने आप ही यों तैयार मिल जाते हैं। ऐसा पूर्व का माल ही लेकर आया हूँ। कपड़े भी सुव्यवस्थित होते हैं। बहुत वैसा नहीं लेकिन सुव्यवस्थित। जो धुले हुए व्यवस्थित हों ऐसे, नहीं कि बाबा के जैसे। व्यवस्थित ही, व्यापारी जैसा। ऐसा कि किसी को पता ही नहीं चलता कि ये ज्ञानी हैं। जब गाड़ी में बैठता हूँ तो किसी को पता चलता है?

अत: श्रीमद् राजचंद्र ने बताया है कि ज्ञानी पुरुष कैसे होते हैं? जिनका कोई बोर्ड नहीं होता, भगवा कपड़े नहीं होते, सफेद कपड़े नहीं होते। यदि भगवा कपड़े होंगे तो लोग जय-जय करेंगे, महाराज-महाराज करेंगे। यदि सफेद कपड़ा हों तब भी 'महाराज-महाराज' करेंगे। ज्ञानी पुरुष को कोई साधारण इंसान पहचान ही नहीं सकता। उनमें कोई नवीनता ही नहीं दिखाई देती न! चेहरे पर चेन्ज दिखाई नहीं देता न! यदि चेहरे से पहचानने की शक्ति हो तब तो पहचान लेंगे। यदि उनकी आँखें देखेंगे न, तो आँखों में संपूर्ण वीतरागता दिखाई देती हैं। वर्ल्ड में ऐसी आँखें ऐसी वीतरागता, किसी की नहीं होती। क्योंकि चोर की आँखें भी हमें पहचान में आ जाती हैं, पता चल जाता है कि इनकी आँखें अलग हैं। पुलिस वालों से पूछो।

मैंने एक बार पुलिस वाले से पूछा, 'हम चोर हैं या नहीं, ऐसा आपको कैसे पता चलेगा?' कहते हैं, 'नहीं, यदि आप चोरी करके आएँ तब भी हम आपको चोर नहीं कहेंगे। क्योंकि आपकी नज़र ही नहीं है, चोरों जैसी। कहते हैं, हम तो तुरंत ही पहचान जाते हैं, जैसे बिल्ली को चूहे की सुगंध आती है वैसे ही हमें सुगंध आती है'। आप इन्कम टैक्स वाले भी सभी को पहचान जाते हैं क्योंकि नज़रें ऐसी होती हैं जबकि हम तो बिल्कुल वीतराग होते हैं। किसी ने किंचित्मात्र भी खराब

किया हो तब भी हमें उस पर द्वेष नहीं हुआ, कभी भी। किसी ने चाहे कितना भी खराब किया हो तब भी मैं आशीर्वाद देता हूँ।

मुक्त पुरुष का मुक्त हास्य

प्रश्नकर्ता : आपका हास्य देखा है न, बिल्कुल वीतराग हास्य लगता है।

दादाश्री : यही मुक्त हास्य कहलाता है।

प्रश्नकर्ता : मुक्त हास्य रहे, हमारे वैसे संयोग हैं, फिर वह किसलिए रुका हुआ है?

दादाश्री : आपके भीतर सारे भूत भरे हुए हैं, इसलिए वह रुका हुआ है। मुक्त पुरुष के सिवाय कोई वह नहीं निकलवा सकता। मुक्त पुरुष अपने मुक्त हास्य से आपको मुक्त हास्य में ले आते हैं। भीतर तरह-तरह के आग्रह रहे हुए होते हैं, इसलिए रोने के टाइम पर रोता नहीं और हँसने के टाइम पर हँसता नहीं है।

ये बूढ़े चाचा अधिक क्यों हँसते हैं? निर्दोषता है इसलिए, सरल हैं इसलिए। सरल अर्थात् जैसे मोड़ो वैसे मुड़ जाएँ, सोने की तरह। उन्हें एक ही घंटे में जैसा आकार देना हो वैसा हो सकता है।

'ज्ञानी पुरुष' निरंतर मुक्त अवस्था में होते हैं, इसलिए सामने वाले का भी अंतर खुल जाता है! हमारा मन मुक्त रहता है, किसी अवस्था में एक क्षण भी वह बंधता नहीं। 'ज्ञानी पुरुष' के दर्शन से ही सब उल्लास में आ जाते हैं। और उससे तो कितने ही कर्म नष्ट हो जाते हैं।

संपूर्ण वीतराग भगवान के अलावा और किसी का भी कर्म रहित हास्य नहीं होता है। वह इस काल में प्रकट हुआ है, अक्रम विज्ञान के 'ज्ञानी पुरुष' के पास प्रकट हुआ है - काम निकाल दे ऐसा है, सर्वस्व कर्म भस्मीभूत कर दे ऐसा है! 'ज्ञानी पुरुष' को जब देखो, रात के दो बजे देखो, तब भी एक ही प्रकार का मुक्त हास्य होता है! जबकि दूसरों के हास्य कषायों से स्तंभित हो चुके होते हैं।

प्रश्नकर्ता : आपके साथ बात करते-करते हमें कभी मुक्त रूप से हँसना आ जाता है, वह मुक्त हास्य कहलाता है?

दादाश्री : हाँ, उस समय मुक्त हो जाता है। ऐसे करके प्रेक्टिस हो जाती है, नहीं तो ये 'दादा भगवान के असीम जय जयकार हो' वैसा हमें किसलिए करने की ज़रूरत है? उस समय भीतर का कचरा निकलता है और मुक्त होते हो।

हमें इन्हें निर्मल रखना पड़ता है

अब, जैसे-जैसे घर के बंधनों से मुक्त हुआ, वैसे-वैसे क्या होता है? उपाश्रय जाता है। उपाश्रय गया इसलिए भीतर का माल अच्छा निकलने लगता है। घर में रहता था इसलिए स्वाभाविक रूप से घर का बंधन तो था न! मैं यदि वहाँ सांताक्रुज में तीसरी मंज़िल पर होऊँ तब घर का बंधन तो रहेगा न?

प्रश्नकर्ता : हाँ, सही है।

दादाश्री : अतः सत्संग का माल जैसा चाहिए वैसा नहीं निकलेगा हमेशा। इसलिए भगवान ने कहा कि, 'एकांत में रहना'। इसका यही कारण था न! संसार से दूर रहने का कारण यही था न! यहाँ अलग रहता हूँ तो उपाश्रय जैसा ही है न!

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : अब यह रूम ही उपाश्रय है न! यहाँ कोई बंधन नहीं है न! यदि कोई हमसे

व्यापार की बात करने आए और चले जाए तो वह ऋणानुबंध है लेकिन बंधन नहीं न, कुछ!

अर्थात् अभी पहले जैसा बहुत ऊँचे प्रकार का सत्संग निकलता है। क्योंकि निर्मल दिखाई देगा न! और यदि कुछ व्यवहारिक बातचीत आई तो निर्मलता में वह हो जाता है, धुंधला दिखाई देता है। अत: फिर जैसा चाहिए वैसा फल नहीं देता। मुझे, मेरा खुद का आनंद कम नहीं होता लेकिन दूसरे को, सामने वाले को लाभ नहीं मिल पाता। यदि जैसा चाहिए वैसा लाभ प्राप्त करना हो तो हमें निर्मल रखना होगा। व्यवहार से यों दूर ही रखना होगा। वह तो कुदरत ने दूर रखा है न, घर से दूर रखा न! देखो, पैर में फ्रैक्चर लाकर कुदरत ने दूर रखा न! और हीरा बा भी कहते हैं कि 'आपकी तबीयत ठीक रहे, आपको जहाँ अनुकूल आए वहाँ रहना।'

वह तो फिर शब्द ही उच्च प्रकार की निकलती है, ठेठ की वाणी निकलती है। बहुत उच्च प्रकार की वाणी निकलती है! यह अभी सब जो वाणी निकल रही है न, वह ग़ज़ब की वाणी निकल रही है! एक-एक वाक्य में तो कितने ही लोगों का काम निकल जाए वैसी!

लघुतम बनकर प्राप्त किया गुरुतम पद

प्रश्नकर्ता : आप कहते हो न, कि हम 'रिलेटिव' में लघुतम होकर प्योर हो चुके हैं, उसका उदाहरण दीजिए।

दादाश्री : 'रिलेटिव' में लघुतम होने का मतलब आपको समझाऊँ। यहाँ से आपको गाड़ी में ले जा रहे हों और दूसरे परिचित आ जाएँ तो फिर आपको कहेंगे, 'अब उतर जाओ।' तब बगैर किसी भी 'इफेक्ट' के उतर जाना। फिर वापस थोड़ी देर बाद कहेंगे, 'नहीं, नहीं। आप आइए।' फिर वापस आपको बिठाया तो आप बैठ जाते हो। वापस दूसरे कोई परिचित मिलें तब वे आपसे कहें, 'उतर जाओ।' तो बगैर किसी भी 'इफेक्ट' उतर जाना। और किसी भी 'इफेक्ट' बिना चढ़ जाना। ऐसा आठ-दस बार हो तो क्या होगा? लोगों को क्या होगा? फट जाएँगे। जैसे दूध फट जाता है वैसे फट जाएँगे!

प्रश्नकर्ता : एक ही बार में फट जाएँगे।

दादाश्री : और मुझे सत्ताईस बार करें तब भी ऐसे का ऐसा! और वापस जाकर वापस आ भी जाऊँगा। वे कहेंगे, 'नहीं, नहीं। आप वापस आइए।' तो वापस आ भी जाऊँगा क्योंकि हम लघुतम हो चुके हैं।

लेकिन 'रिलेटिव' में जितना लघुतम बनेंगे, 'रियल' में उतना ही गुरुतम (पद) प्राप्त होगा इसलिए हम लघुतम बनकर बैठे हैं, तो सामने इस गुरुतम पद की प्राप्ति की। रास्ता मुश्किल नहीं है, इसे समझना मुश्किल है। 'बाइ रिलेटिव व्यू पोइन्ट' मैं सभी का शिष्य हूँ, लघुतम हूँ। 'बाइ रियल व्यू पोइन्ट मैं गुरुतम हूँ।' यानी व्यवहारिक दृष्टि से मुझसे छोटा कोई नहीं है, मुझसे सभी बड़े हैं। इन सभी का मैं शिष्य हूँ। और वास्तविक दृष्टि से, भगवान की दृष्टि से मुझसे बड़ा कोई नहीं है।

लघुतम हुआ तो प्योर हो गया। संपूर्ण प्योर! प्योर होने ही लगा है। जितना प्योर हुआ उतना लघुतम बन गया, उतना प्योर।

दादा की प्योर फोटो करेगी कल्याण

प्रश्नकर्ता : हमने आपमें जो प्योरिटी देखी है। लोग सर्वस्व अर्पण करते हैं। उसके बावजूद

भी आपने किंचित्मात्र किसी का मन से भी लाभ नहीं उठाया। उसका हम खुद अनुभव करते हैं।

दादाश्री : लेकिन आपमें उनकी फोटो खिंच गयी है। जब पहली बार देखा न, तभी यह फोटो खिंच गई है। वे जो फोटो खिंच गई हैं न, वे फोटो ही काम निकाल देंगी।

प्रश्नकर्ता : फोटो काम करती है। और जब यह चीज़ होगी तभी तो आत्यांतिक कल्याण हो सकेगा।

दादाश्री : हाँ, वर्ना जिनका खुद का अपना ही कल्याण न हुआ हो, वे परायों का कैसे कर सकेंगे?

मैं भगवान के वश में और भगवान मेरे वश में

प्रश्नकर्ता : यह तो हमारा अनंत जन्मों का पुण्य फलित हुआ है कि सदेह भगवान मिले, पूर्ण वीतराग मिले!

दादाश्री : मुझे भी भगवान मिले और आपको भी मिल गए! मैं इस भगवान के साथ ही बैठा हूँ। मैं तो 'ज्ञानी पुरुष' हूँ, मैं 'दादा भगवान' नहीं हूँ। भीतर ये जो 'दादा भगवान' हैं, उन्हें मैं इस तरह से नमस्कार करता हूँ और वे ही सच्चे भगवान हैं। ये 'दादा भगवान' दोबारा नहीं मिलेंगे, ऐसे प्योर भगवान! इसीलिए परिवर्तन हो जाता है न! वर्ना परिवर्तन होगा ही नहीं न! यदि मैं भगवान बन बैठा होता न, तो लोगों के मन में जुदाई रहती। मैं भगवान बन जाऊँ, ऐसा हूँ नहीं न! मुझे ज़रूरत ही नहीं है। भगवान क्यों बनना है? यों तो भगवान का भक्त कहलाता हूँ लेकिन वे मेरे वश हो चुके हैं।

वे हमारे वश हो गए हैं। जब मैं कहता हूँ न, कि 'जाओ, दूसरी जगह चले जाओ।' तब वे कहते हैं 'नहीं, ऐसी दूसरी जगह है ही नहीं न!' ऐसी करेक्ट जगह होनी चाहिए, प्योर। इम्प्योरिटी बिल्कुल भी नहीं चलेगी।

प्योर की तो बात ही अलग

प्रश्नकर्ता : आत्मज्ञानी और भगवान में क्या अंतर है?

दादाश्री : बहुत अंतर है। आत्मज्ञानी अभी भी देह में रहे हुए हैं। भगवान तो बिल्कुल अलग हो गए हैं, बिल्कुल अलग हो गए चुके हैं। दोनों में बहुत अंतर है। आत्मज्ञानी को भगवान ही कहा जाएगा लेकिन वे देहधारी भगवान माने जाते हैं। और ये (360 डिग्री वाले) भगवान, वे भगवान कहलाते हैं अर्थात् प्योर। ज़रा सी भी इम्प्योरिटी नहीं। प्योर की तो बात ही अलग न! इम्प्योरिटी वाले में ज़रा सा बिगाड़ होना संभव है। इनमें तो बिगाड़ होना ही नहीं है न! बहुत अंतर नहीं है, इतना ही अंतर है लेकिन वह बिगाड़ तो है ही न! जैसा है वैसा, भगवान जुदा हो चुके हों न, वे भगवान! आत्मज्ञानी के रूप में भगवान कहे जाते हैं लेकिन वहाँ इम्प्योरिटी रहती है। उसमें बहुत स्वाद् नहीं आता, जैसा चाहिए वैसा। आपको आगे का रास्ता मिलता है लेकिन 'उस' जैसा जो स्वाद् और आनंद होना चाहिए, 'उस' जैसा मज़ा नहीं आता, तृप्ति नहीं होती। ये (360 डिग्री वाले) तो हर प्रकार से तृप्ति करवाते हैं। जहाँ प्योरिटी में ज़रा सी कमी हो वहाँ पर ज्ञानी पद। और संपूर्ण प्योरिटी अर्थात् भगवान पद।

फिर से नहीं मिलेंगे इतने प्योर भगवान!

'दादा भगवान', वे भगवान हैं और दादा, वे बावा हैं।

प्रश्नकर्ता : हमें तो दादा भगवान भी भगवान लगते हैं और बावा भी भगवान ही लगते हैं।

दादाश्री : आपको तो ऐसा लगना ही चाहिए, यह तो मैं प्योर बात बता रहा हूँ। इतना प्योर कोई कहेगा ही नहीं न! हमें ऐसी कोई भावना ही नहीं है न कि मेरा नाम रहे! ऐसा तो मैं ही कहता हूँ न, 'मुझ में बरकत नहीं रही!'

ये 'दादा भगवान' फिर से नहीं मिलेंगे, इतने प्योर भगवान! क्योंकि दूसरे भगवान तो ऐसा ही कहते हैं, 'मैं खुद ही भगवान हूँ और मैं ही इसका कर्ता-धर्ता हूँ', लेकिन मैं तो ऐसा कहता ही नहीं न!

प्रश्नकर्ता : नहीं, नहीं।

दादाश्री : जो हैं, उन्हीं के लिए कहता हूँ न, कि ये हंड्रेड परसेन्ट भगवान हैं। अन्य किसी भगवान का गलत नहीं है। बिल्कुल सही बात है लेकिन वे खुद को 'भगवान' कहते हैं इसीलिए हमें उतना पूर्ण लाभ नहीं मिलता जबकि इनसे तो क्या आश्चर्य सर्जित हो सकता है, वह कहा नहीं जा सकता!

इसीलिए तो सब को दादा भगवान दिखाई देते हैं न! नहीं तो दादा भगवान दिखेंगे ही नहीं न! चौबीस घंटे दादा भगवान का ध्यान रहता है, वह किसलिए? आज तक कोई भी इस तरह से याद नहीं रहे। सभी का स्मरण करना पड़ता है, ये अपने आप ही आ जाते हैं। ये तो विस्मृत ही नहीं होते जबकि बाकी सब का स्मरण तो याद करना पड़ता है।

प्रश्नकर्ता : यह तो अपने आप ही शुरू हो जाता है।

दादाश्री : अपने आप ही होता है। लोग कहते हैं न, कि 'यह क्या आश्चर्य है?! हम न चाहें फिर भी उनका ध्यान रहता ही है'।

प्योर ही बनते हैं भगवान के प्रतिनिधि

यह 'वर्ल्ड' अपनी ही मालिकी का है लेकिन सत्ता प्राप्त नहीं होती। वह तो ऐसा है कि जितना-जितना शुद्ध होता जाता है उतनी-उतनी सत्ता प्राप्त होती जाती है।

भगवान के प्रतिनिधि कब कहे जाएँगे? ज्ञान जब शुद्ध रहे। जिन्हें स्त्री की भूख नहीं, स्त्री के विचार ही न आए। लक्ष्मी की भीख नहीं, लक्ष्मी को छुए नहीं, सोना या लक्ष्मी, किसी भी चीज़ को नहीं छुए। मान की भीख न बढ़े। कीर्ति की भीख न हो। यदि कोई अपमान करे तो आशीर्वाद दें तब वे भगवान उन्हें खुद का प्रतिनिधित्वपन दे देते हैं। खुद की सत्ता उन्हें दे देते हैं। ऐसी सत्ता हमारे हाथ में हैं। कैसी सत्ता? संपूर्ण सत्ताधीश! क्योंकि हमें किसी भी प्रकार की भीख नहीं रही। और यदि भीख होगी तो क्या होगा? वह उसी में रचापचा रहेगा। और अंत में तो भीख ही निकालनी है न? ये मान अपमान वे सारी *पुद्गल* की भीख हैं। आपमें हैं क्या अभी भी थोड़ी-बहुत भीख? अब कोई खास भीख नहीं रही?

प्रश्नकर्ता : लेकिन दादा, फाइलों का व्यवहार तो रहा ही है।

दादाश्री : अभी तो व्यवहार चुकता करना पड़ेगा न! हम तो व्यवहार भी चुक्ता करके बैठे हैं। व्यवहार शुद्धि के लिए, सामने वाले को दुःख न हो ऐसा व्यवहार रखना, वह व्यवहार शुद्धि कहलाती है। उन्हें ज़रा भी दुःख न हो यदि हमें हुआ हो तो उसे जमा कर लेना चाहिए लेकिन सामने वाले को तो दुःख होना ही नहीं चाहिए।

प्योरिटी से होता है प्राप्त परमात्मा पद

प्रश्नकर्ता : दादा, लेकिन दृढ़ निश्चय किया है कि कपट को निकालना ही है।

दादाश्री : यदि मोक्ष में जाना है तो सबकुछ साफ करना पड़ेगा। बिल्कुल प्योर! वर्ना मोक्ष में जा ही नहीं सकते न! वहाँ पर इम्प्योर चलता ही नहीं। मेरे साथ बहुत से लोग प्योर हो गए हैं। आप भी प्योर होने लगे हो न, नहीं? प्योर होकर परमात्मा बनना है। आप जो हो वह बनना है। बनोगे न?

प्रश्नकर्ता : इसके पीछे आपकी ही कृपा है। दादा, वैसे एकदम प्योर होने में कितना समय लगेगा?

दादाश्री : यदि हमारा आशीर्वाद मिले तो समय नहीं लगेगा।

प्रश्नकर्ता : दादा, तो दे दीजिए आशीर्वाद।

दादाश्री : वह तो दे दिया है। उसे ऐसा माँगकर नहीं लिया जा सकता, उसे तो हम देते हैं। जब हमारा हृदय खुश हो जाता है तब दे देते हैं। उसके लिए ऐसी कोई भीख नहीं माँगनी होती।

प्रश्नकर्ता : दादा, ज्ञानी का *राजीपा* (कृपा दृष्टि) प्राप्त करना बहुत कठिन है।

दादाश्री : भीख माँगने से काम नहीं चलेगा। प्योर बनो, प्योर!

ये दादा तो हज़ारों लोगों को निरंतर याद रहते हैं, चौबीसों घंटे याद रहते हैं तो कितने प्योर हुए होंगे! जितने प्योर उतने अपने आप ही याद रहा करते हैं। याद करने नहीं पड़ते। प्योर होने की ज़रूरत है। तो सारा कचरा निकल जाएगा। मोक्ष अर्थात् संपूर्ण प्योर! परमात्मा प्योर ही हैं। इम्प्योर, वह जीव और परमात्मा, वह प्योर।

पूर्ण पद के लिए चाहिए खुद की ग़रज़

प्रश्नकर्ता : पूर्ण पद के लिए महात्माओं को क्या ग़रज़ रखनी चाहिए?

दादाश्री : जितना हो सके उतना दादा के पास रहकर जीवन बिताना है, वही ग़रज़, अन्य कोई ग़रज़ नहीं। रात-दिन, चाहे कहीं भी लेकिन दादा के पास रहना है। उनकी विसिनिटी (आसपास) में रहना है।

प्रश्नकर्ता : विशेष रूप से जागृति बढ़ाने का क्या उपाय है?

दादाश्री : वह तो, उसके लिए इस सत्संग में पड़े रहना चाहिए। जितनी प्योरीटी उतनी जागृति।

प्रश्नकर्ता : आपके पास यदि छः महीने तक बैठा रहे तब उसमें स्थूल परिवर्तन होता है फिर सूक्ष्म में परिवर्तन होता है, ऐसा कहना चाहते हैं।

दादाश्री : हाँ, सिर्फ बैठने से ही परिवर्तन होता रहता है।

प्रश्नकर्ता : स्थूल परिवर्तन यानी क्या?

दादाश्री : स्थूल परिवर्तन यानी कि उसकी बाहर की सारी मुश्किलें खत्म हो गई, सिर्फ अंदर की रहीं! और वापस यदि उतना ही सत्संग होता रहा तो अंदर की भी मुश्किलें चली जाएँगी। यदि दोनों खत्म हो गईं तो संपूर्ण हो गया। अर्थात् इसके (सत्संग के) परिचय में रहना चाहिए। दो घंटे, तीन घंटे, पाँच घंटे जितना जमा किया उतना लाभ। ज्ञान प्राप्त करने के बाद लोग ऐसा समझते हैं कि अब हमारा कोई काम बाकी रहा ही नहीं! जबकि परिवर्तन तो हुआ ही नहीं!

आज्ञा से होती है स्पीडी प्रगति

प्रश्नकर्ता : ज्ञान प्राप्त करने के बाद हम महात्माओं की जो प्रगति होती है, उस प्रगति की स्पीड किस पर आधारित है? ऐसा क्या करें ताकि स्पीडी प्रगति हो सके?

दादाश्री : यदि पाँच आज्ञा का पालन करे तो बहुत स्पीडिली और पाँच आज्ञा ही उसका उपाय है। पाँच आज्ञा का पालन करने से आवरण टूटते जाते हैं, शक्तियाँ प्रकट होती जाती हैं। जो अव्यक्त शक्तियाँ हैं, वे व्यक्त होती जाती हैं। पाँच आज्ञा का पालन करने से ऐश्वर्य व्यक्त हो जाता है। सभी तरह की शक्तियाँ प्रकट होती हैं। आज्ञापालन पर आधार रखता है।

हमारी आज्ञा के प्रति सिन्सियर रहना, वह तो सब से बड़ा, मुख्य गुण है। हमारी आज्ञा से जो अबुध हो जाएँ, वे हमारे जैसे ही बन जाएँगे न! जब तक आज्ञा का सेवन करते हैं तब तक आज्ञा में बदलाव नहीं होना चाहिए, तो कोई हर्ज नहीं होगा।

यदि ज्ञान से आज्ञा का पालन करे तो हर तरह से परिणामित होगा और यदि बुद्धि से आज्ञा का पलन करे तो कुछ भी परिणामित नहीं होगा!

निरंतर स्वभाव जागृति

प्रश्नकर्ता : जब देखो तब आप वैसे के वैसे ही लगते हैं। फर्क नहीं लगता, वह क्या है?

दादाश्री : यह क्या फूल है जो मुरझा जाए? ये तो भीतर परमात्मा प्रकट होकर बैठे हैं! नहीं तो, जर्जरित दिखाई देंगे! जहाँ परभाव का क्षय हो गया है, निरंतर स्वभाव जागृति रहती है, जिन्हें परभाव के प्रति किंचित्मात्र रुचि नहीं रही, एक अणु-परमाणु जितनी भी रुचि नहीं रही है, उन्हें फिर क्या चाहिए?

परभाव के क्षय से और अधिक आनंद अनुभव होता है। और आप उस क्षय की ओर दृष्टि रखना। जितना परभाव क्षय हुआ उतना स्वभाव में स्थित हुआ। बस, इतना ही समझने जैसा है, दूसरा कुछ करने जैसा नहीं है।

लोग कहते हैं कि 'दादा' की क्या खुमारी है! अब खुमारी तो अज्ञानता में रहती है लेकिन यह भी एक खुमारी है न! कि जो खुमारी बदलती ही नहीं कभी भी, एक सेकन्ड भी नहीं बदलती। वैसे के वैसे, जब देखो तब वैसे के वैसे ही! सारे संयोग बदलते हैं, लेकिन 'दादा' नहीं बदलते न! और आपको भी अंत में इनके जैसा ही बनना है। आपका ध्येय यही होना चाहिए।

खुद की स्वच्छता अर्थात्...

इस दुनिया में जितनी आपकी स्वच्छता, उतनी दुनिया आपकी! इस दुनिया के आप मालिक हैं! मैं इस देह का मालिक छब्बीस साल से नहीं हुआ, इसलिए हमारी स्वच्छता संपूर्ण होती है! इसलिए स्वच्छ हो जाओ, स्वच्छ!

प्रश्नकर्ता : स्वच्छता के बारे में खुलासा कीजिए।

दादाश्री : स्वच्छता अर्थात् इस दुनिया की किसी भी चीज़ की जिसे ज़रूरत नहीं हो, भिखारीपन ही नहीं हो!

ये सब तो, दुनिया में सिर्फ 'इफेक्ट्स'(असर) ही हैं। दुनिया में दुःख जैसी चीज़ है ही नहीं। सिर्फ 'रोंग बिलीफ' है। फिर भी सामने वाला सही मानता है तो वह उसकी दृष्टि है, लेकिन हम पर उसका असर नहीं होना चाहिए। हमें शुद्ध

हो जाना चाहिए। हम शुद्ध हो जाएँगे तो बाकी का सब शुद्ध हुए बगैर रहेगा ही नहीं।

मात्र प्योर दर्शन से ही जगकल्याण

अपने यहाँ सब क्रीम माल है, शुद्ध और प्योर समझ में आया न! ऐसे माल की तो बात ही अलग है!

प्रश्नकर्ता : यदि वह माल ऐसा है तो दादा के अंदर का माल कैसा होगा, उसकी तो कोई बात ही नहीं।

दादाश्री : वह आश्चर्यजनक माल है न! प्योर नव सौ निन्यानवे नहीं, थाउज़न्ड, वह थाउज़न्ड।

प्रश्नकर्ता : अर्थात् ये 'दादा भगवान' और 'ए.एम.पटेल' दोनों जुदा (अलग) ही रहेंगे?

दादाश्री : हाँ। जुदा ही।

प्रश्नकर्ता : उनमें बुद्धि तो है ही नहीं, प्रज्ञा से ही काम लेते हैं।

दादाश्री : सही है। मन काम नहीं करता है, बुद्धि काम नहीं करती है।

प्रश्नकर्ता : तो दादा पूरे ब्रह्मांड के लिए ये विधियाँ करते हैं। खुद के महात्माओं के लिए, जगत् कल्याण के लिए दादा जो कुछ भी भाव लेकर आए हैं कि जगत् के जीवों का कल्याण हो, ये जो भाव करते हैं, वे भाव ए.एम.पटेल करते हैं या दादा भगवान करते हैं?

दादाश्री : वे तो ए.एम.पटेल हैं। मन-वन नहीं, मन का कोई काम ही नहीं। दर्शन, वह दर्शन में दिखाई देता है कि क्या-क्या करना है। भाव नहीं हैं, वे दिखाई देते हैं, दर्शन! हमें याद नहीं रहता। उसका नाम भी याद नहीं रहता। दर्शन के अनुसार ही ये सारी क्रियाएँ होती रहती हैं।

जगत् कल्याण के लिए चाहिए, सिर्फ प्योरिटी

प्रश्नकर्ता : जगत् कल्याण के लिए प्योर व्यक्ति का क्या महत्व है?

दादाश्री : उनकी उपस्थिति ही जगत् का कल्याण कर देती है। उपस्थिति ही। प्रेज़न्स से ही! जब जगत् का कल्याण होना होता है तब वे उपस्थित हो जाते हैं।

कल्याण करने में एक ही चीज़ है कि जो खुद का कल्याण कर ले, वह बिना बोले दूसरों का कल्याण कर सकता है! अत: करना कितना है? 'ज्ञानी पुरुष' के पास खुद का कल्याण कर लेना है। फिर खुद कल्याण स्वरूप हुआ कि बिना बोले लोगों का कल्याण हो जाएगा और जो लोग बोलते रहते हैं, उससे कुछ नहीं होता। सिर्फ भाषण करने से, बोलते रहने से कुछ नहीं होता। बोलने से तो बुद्धि इमोशनल हो जाती है। यों ही उनका चरित्र देखने से, उस मूर्ति को देखने से ही सभी भावों का शमन हो जाता है यानी कि उन्हें तो केवल खुद ही उस रूप हो जाने जैसा है। 'ज्ञानी पुरुष' के पास रहकर उस रूप होना है। ऐसे पाँच ही तैयार हो जाएँ तो कितने ही लोगों का वे कल्याण कर सकेंगे! बिल्कुल निर्मल बन जाना चाहिए और 'ज्ञानी पुरुष' के पास निर्मल हो सकते हैं और निर्मल होने वाले हैं।

जैसे कि यहाँ पर गर्मी के दिनों में अगर उस तरफ बर्फ पड़ी हो, दरवाज़े के पास और हम सब दरवाज़े से अंदर आएँ तो हवा आती है। बर्फ की हवा का तो अंधेरे में भी पता चल जाता है कि आसपास कहीं बर्फ है।

हमारी मौजूदगी में बिल्कुल भी नींद नहीं आनी चाहिए, किसी को। कमी नहीं रहनी चाहिए।

निरंतर विनय रहना चाहिए। मेरी मौजूदगी में कभी भी आँखें मिच जाएँ तो वह नहीं चलेगा और अपवित्रता तो बिल्कुल भी नहीं चलेगी, यहाँ बिल्कुल पवित्र पुरुषों का काम है। पवित्रता होगी तो वहाँ से भगवान जाएँगे नहीं!

बनो प्योर, पूर्णाहुति के लिए

प्रश्नकर्ता : आपकी मौजूदगी में यह सब बिल्कुल साफ हो जाए, सभी को ऐसे आशीर्वाद दीजिएगा।

दादाश्री : हम तो ऐसे आशीर्वाद देते हैं। लेकिन यह तो साफ करोगे तब न!

प्रश्नकर्ता : साफ कर देंगे।

दादाश्री : हमें तो अपना काम निकाल लेना है। इसी की पूर्णाहुति के लिए शरीर घिस देना है। चाहे जैसे संयोग मिलें फिर भी स्थिरता नहीं टूटे, ध्येय नहीं बदले, उसे धर्म प्राप्त किया कहा जाएगा। यह तो लोग आबरू रखने के लिए अच्छे रहते हैं या फिर उल्टे रास्ते ले जाने वाले संयोग नहीं मिले इसलिए अच्छे रहे हैं! हम सब का ध्येय 'शुद्धात्मा' और मोक्ष, ताकि दूसरा कुछ छुए ही नहीं। पर-परिणति छुए ही नहीं। अभी आप पूरा दिन पर-परिणति में रहते हो और मोक्ष ढूँढ रहे हो? मोक्ष में जाना हो तो वही एक ध्येय चाहिए।

अब प्योर बनने में ढील नहीं रखनी चाहिए

प्रश्नकर्ता : ज़िंदगी में वर्ष कम हैं और रास्ता लंबा है, पर यह अक्रम चीज़ मिल गई, उससे बहुत उल्लास आता है!

दादाश्री : ऐसा है न, ऐसा कभी होता नहीं है और हुआ तो अपना काम निकाल लेना है। उल्लास तो आएगा ही न! मुझे यह ज्ञान प्रकट हुआ, तब मुझे भी उल्लास आया कि ऐसा ग़ज़ब का ज्ञान! ग़ज़ब की सिद्धियाँ उत्पन्न हुई हैं!

हमें अब अपने रास्ते ध्येय के अनुसार चलना है। दूसरे रास्ते से जाना है। यदि चला जाए तो कहना 'इस ओर आ जा' जो ध्येय तुड़वा दें, वे अपने दुश्मन हैं। अपने ध्येय का नुकसान करवाए तो वह कैसे पुसाएगा?!

दूसरा बाहर का रोग पैठ न जाए कि, 'चलो अब मैं पाँच लोगों को सत्संग सुनाऊँ या ऐसा कुछ', इसका ध्यान रखना है। नहीं तो फिर दूसरे नई तरह के रोग घुस जाएँगे और गलत रास्ते पर चला जाएगा। तब फिर क्या होगा? कोई बचाने वाला नहीं मिलेगा। अत: अगर मोक्ष में जाना हो तो 'बात करने' में मत पड़ना। कुछ पूछे तो कहना कि 'मैं नहीं जानता।' ये तो हम सारे भयस्थान दिखा रहे हैं। भयस्थान नहीं दिखाएँगे न, तो सब उल्टा हो जाएगा। उसके खुद के ध्येय में 'टी. बी.' ही हो जाएगी न! सड़न ही घुसने लगेगी न!

अब हमें यहाँ तो खुद का मन इतना मज़बूत कर लेना है न, कि ''इस जन्म में जो हो, भले ही देह जाए लेकिन इस जन्म में कुछ 'काम' कर लूँ'' ऐसा तय करके रखना चाहिए तब फिर अपने आप काम होगा ही। आपको अपना तय करके रखना चाहिए। आपकी तरफ से ढील नहीं रखनी है।

खुद के पास अधिकार किसका है? 'प्योर भाव' कि इतना मुझे कर लेना है। निश्चय अर्थात् खुद के अधिकार का उपयोग करना।

अब तो एक क्षण भी गँवाने जैसा नहीं है। ऐसा अवसर बार-बार नहीं आएगा।

- जय सच्चिदानंद

सत्संग प्राप्ति के डिजिटल माध्यम

AKonnect App : Android और iPhone mobile में AKonnect App द्वारा आपको सत्संग अपडेट्स, पूज्यश्री के अपडेट्स, लोकल सेन्टर के अपडेट्स तथा MMHT, WMHT, PMHT, GNC, MBA वगैरह ग्रुप के अपडेट्स और सूचनाएँ नियमित रूप पर दी जाती है। इसके अलावा Today's Energizer, आप्तसूत्र, वेबसाइट, वॉलपेपर वगैरह के अपडेट्स भी दिए जाते हैं। - AKonnect app-https://akonnect.org/app

Dadabhagwan App : Android और iPhone mobile में Dadabhagwan App द्वारा सत्संग शेड्युल, पुस्तकें, ओडियो - वीडियो सत्संग, मैगज़ीन, फोटो गैलरी, सत्संग सेन्टर की सूचना और साधना मोड्युल द्वारा विविध सत्संग से संबंधित सूचनाएँ और सामग्री उपलब्ध है।
Dadabhagwan app - https://www.dadabhagwan.org/app

dadabhagwan.tv : इस वेबसाइट द्वारा दिन में 24 घंटें नॉन स्टॉप सत्संग प्रसारित होते रहते हैं। आप किसी भी समय इस app पर सत्संग सुन सकते हैं। https://www.dadabhagwan.tv

Youtube Channel : दादा भगवान फाउन्डेशन की Youtube Channel पर मुमुक्ष और महात्माओं के लिए उपयोगी कई वीडियो रखे गए हैं और नियमित रूप से नए-नए वीडियो अपलोड किए जाते हैं। आप अपड्रेस प्राप्ति के लिए इस Channel को subscribe कर सकते हो।
Youtube - https://www.youtube.com/user/dadabhagwan

उपरोक्त दोनों mobile app, टी.वी. के वेबसाइट और Youtube Channel पूज्यश्री के जो सत्संग लाइव वेबकास्ट होने होते हैं, वे सत्संग उसी समय लाइव देखे जा सकते हैं।

dadabhagwan.fm : इस वेबसाइट द्वारा आप दिन भर नॉन स्टॉप ओडियो सत्संग सुन सकते हैं। आप इस वेबसाइट पर जाकर विविध मोड्युल के बारे में जानकरी प्राप्त करके विविध सत्संग, भक्ति पद, ज्ञानवाणी, सामायिक से संबंधित सत्संग, आरती वगैहर सुन सकते हैं। - https://www.dadabhagwan.fm

विशेष निवेदन

कोरोना वायरस महामारी की वर्तमान परिस्थिति में पूज्यश्री दीपकभाई की निश्रा में सभी कार्यक्रम तथा आप्तपुत्रों-आप्तपुत्रीओं के विविध सेन्टरो में आयोजित सभी कार्यक्रम विलंबित किए गए है। भविष्य में परिस्थिति सामान्य होने के बाद सरकार द्वारा धार्मिक कार्यक्रमों के लिए अनुमति देने के बाद कार्यक्रम आयोजित होंगे।

'दादावाणी' के वार्षिक / 15 साल के सदस्यों के लिए सूचना

आपको आपकी दादावाणी पत्रिका की सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? आपको मिली इस महीने की दादावाणी पत्रिका के कवर पर लगे हुए लेबल पर ग्राहक नं. के अंतिम छः अंक की जांच करें। DGFT555/**08-28** यानी आपकी सदस्यता अगस्त-2028 को समाप्त हो रही है।

त्रिमंदिरो के संपर्क : अडालज : 079-39830100, 9328661166-77, **राजकोट :** 9924343478, **भूज :** 9924345588, **अंजार :** 9924346622, **मोरबी :** 9924341188, **सुरेन्द्रनगर :** 9737048322, **अमरेली :** 9924344460, **वडोदरा:** 9574001557, **गोधरा :** 9723707738, **जामनगर :** 9924343687 **अन्य सेन्टरों के संपर्क : अहमदाबाद:** (079) 27540408, **मुंबई:** 9323528901, **वडोदरा (दादा मंदिर) :** 9924343335, **दिल्ली:** 9810098564, **बैंगलूर:** 9590979099, **कोलकता:** 9830080820
यु.एस.ए.-केनेडा: +1 877-505-DADA (3232), **यु.के.:** +44 330-111-DADA (3232), **ऑस्ट्रेलिया:** +61 421127947

पूज्य नीरू माँ/पूज्य दीपक भाई को देखिए टी.वी. चैनल पर

भारत

'दूरदर्शन'-नेशनल पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30

'दूरदर्शन'-उत्तरप्रदेश पर हर रोज़ सुबह 7 से 8 (हिन्दी में)

'उड़ीसा प्लस' टीवी पर हर रोज़ सुबह 7-30 से 8 (हिन्दी में)

'दूरदर्शन'-सह्याद्रि पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 तथा सोम से शुक्र शाम 5-30 से 6 (मराठी में)

'दूरदर्शन'-चंदना पर सोम से शुक्र सुबह 11-30 से 12 (कन्नड में)

'दूरदर्शन'-मध्यप्रदेश पर हर रोज़ रात 10 से 11 (हिन्दी में)

'दूरदर्शन'-गुजरात (गिरनार) पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30; दोपहर 2 से 2-30; रात को 10 से 10-30

'अरिहंत' चैनल पर हर रोज़ सुबह 3-30 से 4-30, दोपहर 2-30 से 3, रात को 8 से 9

USA - Canada

'TV Asia'- पर हर रोज़ सुबह 7-30 से 8 EST

'Rishtey' पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 तथा 8 से 8-30 EST (हिन्दी में)

U K

'वीनस' टी.वी. पर हर रोज़ सुबह 8 से 9 GMT

'MA TV' पर हर रोज़ शाम 5-30 से 6-30 GMT

'MA TV' पर हर रोज़ रात को 9-30 से 10-30 GMT (हिन्दी में)

'Rishtey' पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 Western European Time (6 to 6-30am GMT)

USA-UK-Africa-Australia

'आस्था' पर सोम से शुक्र रात को 10 से 10-30 (डिश टी.वी. चैनल यू.के.-849, यू.एस.ए-719)

Australia

'Rishtey' पर हर रोज़ सुबह 8 से 8-30 और दोपहर 1-30 से 2 (हिन्दी में)

Fiji-NZ-Singapore-SA-UAE

'Rishtey' पर हर रोज़ सुबह 6 से 6-30 और 7-30 से 8 (हिन्दी में)

जुलाई 2020
वर्ष-15 अंक-9
अखंड क्रमांक - 177

दादावाणी

Date Of Publication On 15th Of Every Month
RNI No. GUJHIN/2005/17258
Reg. No. G-GNR-348/2018-2020
Valid up to 31-12-2020
LPWP Licence No. PMG/HQ/036/2018-2020
Valid up to 31-12-2020
Posted at Adalaj Post Office
on 15th of every month.

'दादा' कहते ही दादा उपस्थित

यदि इन कर्मों को खत्म कर दिया होता और यह ज्ञान मिलता, तो एक ही घंटे में उसका काम पूर्ण हो जाता। परंतु कर्म खत्म नहीं किए हैं, रस्ते चलते हुए को ज्ञान दे दिया है! जब भीतर कर्म के उदय बदलते हैं तब बुद्धि का प्रकाश बदल देता है, उस समय उलझन होती है। जब उलझन हो तब 'दादा, दादा' करते रहना और कहना, 'यह लश्कर उलझाने आया है।' क्योंकि अभी तो ऐसे उलझाने वाले भीतर बैठे हैं, इसलिए सावधान रहना। और उस समय 'ज्ञानी पुरुष' का ज़बरदस्त आधार रखना। मुश्किल तो कब आ जाए, यह कह नहीं सकते। लेकिन उस समय 'दादा' से सहायता माँगना, ज़ंजीर खींचना तो 'दादा' उपस्थित हो जाएँगे।

- दादाश्री

Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation - Owner. Printed at Amba Offset, B - 99, GIDC, Sector - 25, Gandhinagar - 382025.